वर्ष: -2026

पंचरत्न

अंक प्रथम

17 सितम्बर 2026

यह स्मारिका सामाजिक एवं धार्मिक है जो हमारे विश्वकर्मा समाज की परम्पराओ
व सांस्कृतिक मूल्यो को दर्शाती है।

विश्वकर्मा समुदाय
(मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी, दैवज्ञ)



: प्रकाशक :

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज

पंजि0 : 989/1965-66

प्राचीन श्री विश्वकर्मा मंदिर

380/328, नई वस्ती शंकर लाल भार्गव, कीड़गंज, प्रयागराज

"वैधानिक घोषणा"

पंचरत्न की सम्पादकीय समिति घोषणा करती है।

1. इस स्मारिका के सम्पादन से सम्बन्धित पदाधिकारी अवैतनिक है।
2. इस स्मारिका का प्रकाशन दान-दाताओं के सहयोग से किया जाता है।
3. स्मारिका में प्रकाशित लेख व रचनाएं लेखकों के अपने विचार है एवं वैध अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर समस्त विशयों को दर्शाया गया है।
4. स्मारिका निःशुल्क वितरण हेतु है-

उद्देश्यः (i) विश्वकर्मा पॉचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के उद्देश्यों का अनुसरण कर समस्त कार्यो का स्मारिका के माधयम से आम जन मानस तक पहुँचाना।

(ii) विश्वकर्मा समाज को संगठित कर सर्वांगीण विकास के पथ पर अग्रसित करना।

(iii) समाज के बुद्धजीवियों समाज सेवियों के अनुभवों एवं (सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, शैक्षिक, व्यवहारिक पारम्परिक) उपलब्धियों को समाज में संप्रेषित करना।

(iv) विश्वकर्मा समाज की गौरवमयी गरिमा को अभिवृद्धि करना।

(v) स्वस्थ वैचारिक मब्यत प्रस्तुत कर समाज को सम्पन्न एवं जागरूक करना।

संकल्प

स्मारिका प्रतिवर्ष प्रकाशित होगी। स्मारिका में प्रकाशनार्थ लेख, कहानियाँ, कवितायें जो मौलिक हो और जिनका प्रकाशन अन्यत्र न हुआ हो भेजी जा सकती है। प्रकाशन हेतु लेख, काहनीयाँ, कवितायें 1 सितम्बर तक सम्पादिय मंडल तक अवश्य भेजदें।

नोटः-

सहयोग राशी आप विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा के खाता सं0 1001200100017805 IFSC Code PUNB0100120 पंजाब नेशनल बैक शाखा अल्लापुर, प्रयागराज में या QR Code (क्यू.आर. कोड) के माध्यम से जमा कर सकते हैं।

कल्याणकारी प्रयोजनः- 1. स्मारिका पंचरत्न प्रकाशन हेतु
2. प्रबन्धन एवं मन्दिर जिर्णोद्धार

'जगत गुरू भगवान विश्वकर्मा' जी की स्तुति

''ॐ श्री विश्वकर्मणे नमः''

स्तुति

विश्वकर्मणे विभुं, ब्राह्म वाचस्पति।
शिल्प रत्नाकर, विश्वनाथ प्रभुम्।।
अभ्रन्भू व्यापकं, मंगल भास्वरं ।
सृष्टि कर्त्ता श्रमं, आदि देवं भजे।।1।।
सुन्दर सुप्रियं, शुभ्र रूप शुभ।
दीनता नाशकं, भक्त मोदं प्रदभ्।।
श्री कलाधीश्वर, मेदिनी घारकम्।
नित्य नारायणो, शिल्प देवं भजें ।।2।।
आदि रूपं नमस्तुभ्य, नमस्तुभ्य पिता महः।
विराहज्यं नमस्तुभ्य, विश्वकर्मनमो नमः।।3।।
नमो वेदान्त वैद्याय, वेद मूल निवासिने।
नमो विविक्ति चेष्टाय, विश्वकर्मन्नमो नमः ।।4।।
सहसत्रशीर्षः पुरूष, सहाक्षत्रः सहस्त्रपान।
सहस्त्र बाहु संयुक्तः, सहस्त्रः चरणौ युक्तः ।।5।।
अनादिर प्रमेयश्च, असयश्च जयाजयः।
लोक रूपो जगन्नाथ, विश्वकर्मन नमोस्तुते ।।6।।

सम्पादकीय मण्डल

प्रधान सम्पादक –

1. डॉ० मदन मोहन (पूर्व असिस्टेंट प्रोफेसर होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, देहरादून)
पता- 61 डी/3सी/4 ओम गायत्रीनगर, प्रयागराज, मो.: 9984011007
2. इन्द्रबहादुर विश्वकर्मा एडवोकेट
पता- चकिया साथर, पो.- मणुवा बाजार, तहसील-हंडिया, प्रयागराज,
मो.: 9839137863

सम्पादक –

1. हरिश्चन्द्र विश्वकर्मा अ० प्रा० प्रधानाचार्य (मुख्य संरक्षक)
बभनकुईया, सहसों, प्रयागराज, मो.: 9839157895
2. रामसूरत विश्वकर्मा (से.नि.) निजी सचिव उत्तर प्रदेश सचिवालय

सह सम्पादक –

1. सुरेशचन्द्र विश्वकर्मा उप सचिव (से.नि.) उ०प्र० सचिवालय
मो.: 9454411588
2. मुरलीधर विश्वकर्मा (पर्यावरण विद) वार्ड नं. 6 हंडिया, प्रयागराज,
मो.: 8707002556
3. रमन जी विश्वकर्मा मलाक हरहर चौराहा, फाफामऊ, प्रयागराज
मो.: 9936829861
4. डॉ. अलोक कुमार विश्वकर्मा असि. प्रोफेसर (हिन्दी) नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय
प्रयागराज मो.: 8318385529

परामर्शदात्री –

1. हेमन्ती शर्मा (वरिष्ठ समाज सेवी) 80/14 मधवा पुर, प्रयागराज
मो.: 6386364661
2. अरविन्द विश्वकर्मा, इनकम टैक्स, लखनऊ
3. राम गनेश विश्वकर्मा, (समाजसेवी) बाबूपुर, कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़
मो.: 9935353673
4. दुष्यन्त शर्मा, (विश्वकर्मा वाच) कटरा, प्रयागराज। मो.: 9839291161
5. सुरेश चन्द्र विश्वकर्मा (पूर्व डिप्टी चेयरमैन) फूलपरु, प्रयागराज।
मो.: 9792109937
6. कमलाशंकर विश्वकर्मा (संरक्षक) विसही जिनकला, मेजा रोड, प्रयागराज।
मो.: 9415634036

समाचार प्रकाशक –

1. मनोज विश्वकर्मा (वैद्य), हंसराजपुर, प्रयागराज। मो.: 919859442

संग्रहकर्ता –

मनोज कुमार शर्मा (एडवोकेट), 80/14 मधवापुर, प्रयागराज।

प्रचारक –

विद्याकान्त विश्वकर्मा, (प्रधानाध्यापक) छिबैया, झूँसी, प्रयागराज। मो.: 9956849120

2. राम सम विश्वकर्मा (एडवोकेट) मनैया, करछना, प्रयागराज।
मो.: 9795287978
3. महेन्द्र विश्वकर्मा (एडवोकेट) {ज्योति स्टील वर्कस} नैनी, प्रयागराज।
मो.: 7355684445

विधिक सलाहकार –

1. कृष्ण कुमार विश्वकर्मा (अधिवक्ता हाईकोर्ट) मो.: 7897833788
2. मंजूला शर्मा (एडवोकेट) मो.: 7991965406
3. राजेश कुमार विश्वकर्मा (अधिवक्ता) मो.: 9889062377

''परब्राह्म विश्वकर्मा परमात्मा की आरती''

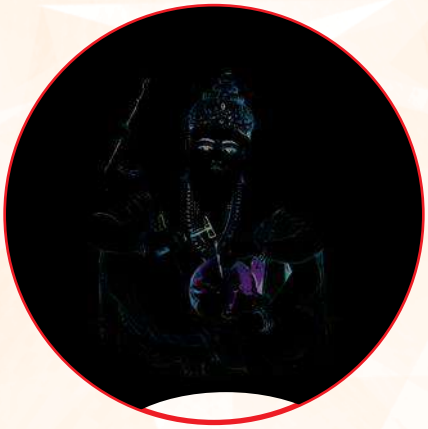

''ॐ श्री विश्वकर्मणे नमः''

''आरती''

ॐ जय विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।
सकल सृष्टि के कर्त्ता –2, रक्षक श्रुति धर्मा ।।
ॐ जय विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे। पंचानन राजे।
दो भुज चार चतुर्भूज – 2, दस भुज अति साजे।।
ॐ जय विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।
विराट रूप तुम्हारा तुम हो अविनाशी। प्रभु तुम हो अविनाशी।
प्रेम सुधा बरसाओ – 2 तुम मंगल राशी।।
ॐ जय विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।
शीश मुकुट मणि कुण्डल, पीताम्बर पारी। प्रभु पीमाम्बार धारी।
दिव्य ज्योति मुख मंडल – 2 लागे अतिन्यारी।।
ॐ जय विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।
विराट विश्वकर्मा की आरति, सब जन मिल गावें। प्रभु प्रेम सहित गावें।
कहत विमल स्वामी – 2 सुख सम्पति पावें।।
ॐ जय विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।

सद्भावना संदेश
''पंचरत्न''



सुरेश चन्द्र विश्वकर्मा
उपसचिव (से.नि.)
उत्तर प्रदेश सचिवालय
मो.: 9454411588

विश्वकर्मा वंशजों के लिए यह अत्यंत प्रेरणा एवं हर्ष की बात है कि विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज द्वारा वर्तमान वर्ष में भी विश्वकर्मा वंशजों हेतु उपयोगी एवं कल्याणकारी लोकप्रिय पत्रिका ''पंचरत्न'' का प्रकाशन किया जा रहा है। ''पंचरत्न'' पत्रिका, विश्वकर्मा समाज के प्रख्यात शिक्षाविदों, अभियांत्रिकी जगत के प्रुखम मनीषियों, परिनिर्माण जगत के शीर्षस्थ वास्तुकारों और व्यावसायिक शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा तथा वास्तु शिल्प शिक्षा जगत के महान विश्वकर्मा हस्तियों से संबंधित प्रेरणादायी लेखों के पुष्पगुच्छ के रूप में परिलक्षित हुई। इस पत्रिका में अभिलिखित प्रत्येक लेख पृथक-पृथक सुगंध से अप्लावित है जिन्हें घ्राण करके तथा आत्मसात करके चित्त, मन और आत्म आह्लादित हो गया।

वस्तुतः विश्वकर्मा भगवान केवल मंदिर, भवन, अस्त्र-शस्त्र या पंच परिर्निमित करने वाले देवता ही नहीं हैं विद्यमान सृजनात्मक संचेतना के जीवंत प्रतीक भी हैं।विश्वकर्मा वंशियों द्वारा अपने हृदय के भीतर सृजित शक्ति को जागृत किया जाना और अपने जीवन को परमात्मा की उत्कृष्ट कृति के रूप में रूपांतरित किया जाना ही विश्वकर्मा भगवान की वास्तविक आराधना कहलाता है।

''पंचरत्न'' गहन समीक्षा एवं विश्लेशण''

विश्वकर्मा भगवान समस्त सृष्टि की रचना, व्यवस्था और संचालन के आदि प्रवर्तक हैं। उनके पाँच मानस पुत्र ''पंचरत्न'' के रूप में अभिहित किए जाते हैं जो सृजनात्मक संचेतना से प्रकट होने वाले प्रतीकात्मक रूप में पाँच दिव्य रत्नों के प्रतीक माने जाते हैं।

''पंच'' शब्द का तात्पर्य मात्र पाँच की गणना ही नहीं वरन् ग्रंथों में अभिलिखित प्रकृति के पाँच दिव्य वृत्तियों के भी द्योतक हैं।

''रत्न'' ऐसे पदार्थ होते हैं जो सर्वाधिक मूल्यवान, ज्वाज्वल्यमान और दुर्लभ होते हैं। किन्तु व्यापक आयाम में ''पंचरत्न'' प्रकृति के पाँच दिव्य वृत्तियों यथा विवेक, ज्ञान, कर्म, कौशल एवं करुणा के भी द्योतक होते हैं जिनके माध्यम से जीवन को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है।

''पंचरत्नानि विश्वकर्मण: पंचदिव्या: सृजनाशक्तय: सन्ति''

अर्थात ''पंचरत्न'' विश्वकर्मा भगवान की पाँच दिव्य सृजनात्मक शक्तियाँ हैं। समस्त विश्व उन्हीं दिव्य शक्तियों की विराट अभिव्यक्ति है। मनुष्य जब अपने भीतर इन शक्तियों का संतुलन स्थापित कर लेता है तो वह अपने जीवन निर्माण का भी सृजनकर्ता बन जाता है।

अंततः मैं ''पंचरत्न'' पत्रिका के सम्पादनार्थ मनसा, वाचा कर्मणा अहर्निश समर्पित समस्त प्रबुद्ध संपादक टीम को स्नेह-पुष्प अर्पित करता हूँ और इस पत्रिका के व्यापक रूप में पुष्पित एवं फलान्वित होने की मंगल कामना करता हूँ।

दारा सिंह चौहान
मंत्री
कारागार विभाग, उ0प्र0

सं0 डी0ओ0श्री.आई.पी./कारा.वि./2026
एफ0-1/2 पाचवाँ तल
बापू भवन, उ0प्र0 सचिवालय
कार्या0 0522-2238635
आवास 0522-2236178
ई-मेल : ministerjail2024@gmail.com
लखनऊ, दिनांक 06.9.2026

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज द्वारा **"पंचरत्न"** स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पत्रिका का प्रकाशन समाज में एकता का सूत्र पिरोने का कार्य करेगी। यह स्मारिका न केवल संगठन की रचनात्मक गतिविधियों का दर्पण बनेगी, बल्कि समाज की सांस्कृतिक धरोहर, वैचारिक चेतना और आपसी सहयोग के संकल्प को भी सशक्त करने का कार्य करेगी।

इस पावन अवसर पर प्रकाशक मण्डल तथा सम्पूर्ण सम्पादकीय टीम को बधाई तथा स्मारिका की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

[redacted]

श्री राम लोटन विश्वकर्मा,
सभापति,
विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा,
प्रयागराज।

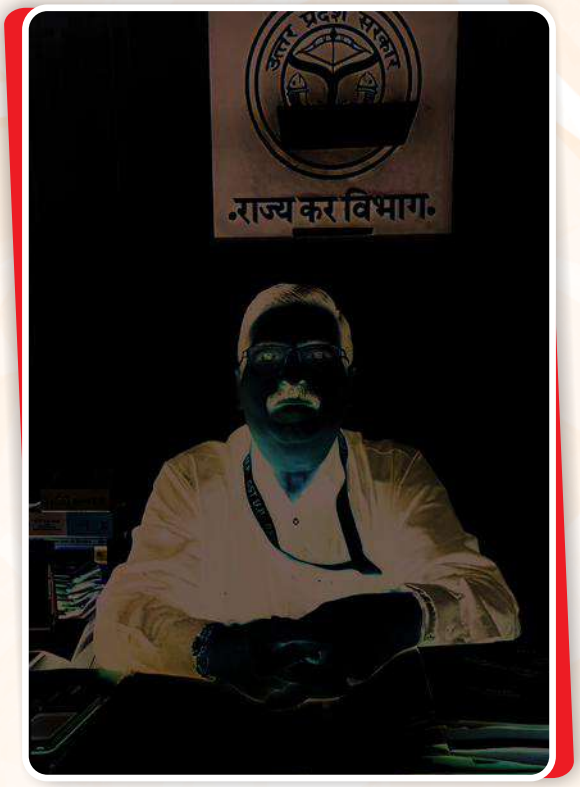

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा जिला सभा प्रयागराज द्वारा ''पंचरत्न'' स्मारिका के माध्यम से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देने वाले व्यक्तित्वों, विचारों एवं उपलब्धियों का समावेश भावी पीढ़ी के लिए दिशा-प्रेरणा का कार्य करेगी। यह सामज में जागरूकता, एकता और आत्मसम्मान की भावना को सशक्त रूप से स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगी।

मैं विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के सभी पदाधिकारियों, सहयोगियों एवं सम्पादकीय टीम को इस उत्कृष्ट कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ

09.26

(अच्छे लाल विश्वकर्मा)

संयुक्त आयुक्त(कार्यपालक) राज्य कर,

प्रयागराज सभाग-बी, प्रयागराज।

Prof. Bechan Sharma Ph.D.
Ex. HEAD
DEPARTMENT OF BIOCHEMISTRY
(Faculty of Science)
Ex. Dean. Faculty of Science

UNIVERSITY OF ALLAHABAD
Alahabad 211 002 (India)
Email.sarmabi@rediffimail.com
Tel: + 91-9415715630



Message

It gives me immense pleasure to know that the District Committee of Vishwakarma Panchal Brahman Sabha is publishing this year a memoir 'Panch Ratna' to honour the dedication of traditional artisans, engineers, modern craftspeople and the hands that shape tomorrow while highlighting their significant contribution in national growth through skill development and innovation.

Today, India's traditional craftsmanship is undergoing a historic transformation. Through an Atmanirbhar Bharat initiatives like the PM Vishwakarma Scheme, millions of silent hardworking architects of India are gaining access to advanced skill training, digital tools, and financial support. This progress bridges our rich cultural heritage with future-ready innovation. May our tools remain instruments of progress, and may our collective craftsmanship continue to build a thriving, prosperous world.

I do believe that this endeavour to bring out the publication of "Panch Ratna" will be able to create awareness among the people motivating them to recognise their potential to grow with high level of self esteem and unity.

I congratulate all the office bearers and the Editorial Team of Vishwakarma Panchal Brahman District Sabha, Prayagraj for taking up this remarkable task for the benefit of the society.

Prof. Bechan Sharma



शुभकामना संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज ''पंच रत्न'' स्मारिका का सर्वयामी प्रकाशन ज्ञान विज्ञान के आदि देव विश्वकर्मा जी के जयन्ती पूजन के महापर्व पर विशेष रूप से प्रकाशित हो रहा है।

मुझे आशा है कि सृहनकर्ता भगवान विश्वकर्मा की महनीय कृपा से 'स्मारिका' इस सारस्वत यज्ञ मे, अध्यात्मिक वैज्ञानिक, सामाजिक, अर्थिक एवं रजनौतिक विकास को सोपानवत्र आहुति मापदण्ड का किंचित सम्यक दर्शन होगा।

पंच रत्न स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिऐ हार्दिक शुभकामनाएं।

राम सूरत विश्वकर्मा
निजि सचिव (से.नि.)
उ0प्र0 शासन

सत्यमेव जयते

सम्पादकीय - कल की विरासत, आज का संकल्प, कल का निमार्ण

नानृतम्।



श्री हरिश्चन्द्र विश्वकर्मा
अ0 प्रा0 प्रधानाचार्य
(मुख्य संरक्षक, समाज संवाहक)
मो.: 9839157895

ॐ श्री विश्वकर्मणे नमः

विश्वकर्मन् नमस्तेऽतु विश्वआत्मा विश्वसम्भवः।
अपवर्गोसि भूतानां पंञ्चानां परतः स्थितः।।

महाभारत-शान्तिपर्व 47/35

हे विश्वकर्मन्! आप संसार की आत्मा तथा विश्व के उत्पादक है। आप प्राणियों के लिए मोक्षरूप हैं और पंञ्च-तत्व रूप प्रकृति से परे हैं, आपको नमस्कार है।

अविनाशी प्रभु विश्वकर्मा द्वारा प्रवर्तित शिल्प महाविज्ञान का आधार लेकर सम्पूर्ण मानव जगत जीवत मापन करता है। (महा० 1/66/20) अस्तु सृष्टिकर्ता भगवान विश्वकर्मा की आराधना उपासना मानव मात्र के लिए अपरिहार्य है। परिणामतः 17 सितम्बर कन्या संक्रान्ति को विराट विश्वकर्मा पूजनोत्सव एवं माघ शुक्ल त्रयोदशी को जन्मोत्सव पूजत, यज्ञ-हवन, प्रवचन आदि होते हैं। यही नहीं समस्त शिल्पकर्मियों, अभियन्ताओं, औद्योगिक संस्थानों, राजकीय अर्द्ध-राजकीय विभागों तथा तकनीकी विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में उच्चस्तरीय रूप में मनाया जाता है। जो निश्चय ही भगवान कृष्ण के ज्ञान योग कर्मयोग एवं भक्ति योग दर्शन में निरूपित कर्म श्रेष्ठता का द्योतक है।

ऋग्वेद का ज्ञान काण्ड, यजुर्वेद का कर्म काण्ड, सामवेद का उपासना गीत एवं अथर्ववेद का विज्ञान, काण्ड यज्ञ एवं शिल्प, कर्म एवं विज्ञान के बीच उत्कृष्टतम स्वरूप अभव्यिक्त करता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में दृश्य-अदृश्य महापिण्डादि नक्षत्रों, निहारिकाओं, ग्रहों-उपग्रहों से लेकर परमाणु-भाग इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन, प्रोटान तक सतत गतिशील कर्मशील हैं। जो भगवान विश्वकर्मा की सर्वभौम दिव्य, परिष्कृत श्रेष्ठता को निरूपित करते हैं। जिसका प्रमाण विश्वकर्मा सूक्त ऋग्वेद 10/81-82 आदि परिशिल्प, दृश्टव्य एवं स्तुव्य है।

इस विश्वकर्मा पूजनोत्सव-जयंती पर्व की व्यापक श्रृंखला में उत्तर-प्रदेश की धार्मिक नगरी प्रयागराज के कीडगंज में स्थापित सन् 1960 पंजी.सं. 989/1965-66 से प्रति निरंतर भव्य आयोजन होता रहा है जिसके संस्थापक सर्व श्री शिव प्रसाद राउत जी ने 'पञ्चामुखी भगवान विराट रूप विश्वकर्मा' मन्दिर हेतु दान दिया। जो 'अकाउन्टैंट जनरल' कार्यालय में सीनियर 'सुप्रिरिन्टेनडैंट' प्रयागराज में थे। इसके बाद सभा 'पाञ्चाल ब्राह्मण को श्रीमती गुलाबो देवी जी ने प्रसन्न होकर स्वेच्छा से 'बैरहना' मुहल्ले के भवन के चारों कमरों को आय हेतु प्रसाद, चंदन, पूजन, अगरबत्ती के लिए समर्पित किया। जिसमें पंडित सर्व श्री श्रीनाथ शर्मा-सभापति एवं श्री पंडित रामदुलारे विश्वकर्मा बहुत ही जिज्ञासु एवं तेज तर्राक कार्यकर्त्ता थे। शेश नाम पत्रिका में अंकित हैं।

आज मानव जगत में पुनः शांति, सुरक्षा एवं उत्कर्ष की वास्तविक पराकाष्ठा हेतु धर्माचार्यों, राजनेताओं के साथ विज्ञानाचार्यों, मौलिक शिल्पचार्यों, कर्मयोगी अभियन्ताओं को भी समभाव से सादर नमन करना होगा। प्रभु विश्वकर्मा-वंशजों को अतीत की भाँति सुविधा सम्मान देना होगा। तभी सुख, समृद्धि, सामाजिक न्याय, अभीष्ट विकास सरलता से प्राप्तव्य होगा।

इसमें सम्पादक व संगठन के अथक् परिश्रमी कार्यकर्त्ता के परिणाम स्वरूप ही स्मारिका का 'पंचरत्न' नये कलेवर में संकलित होना सम्भव हो रहा है। स्मारिका से व संगठन से जुड़े सभी लोगों का 'मनसा-वाच-कर्मणा' से योगदान 'मन' को अभिभूत करता है।

वर्तमान अंक में 'स्मारिका 'पंचरत्न' के प्रकाशन में सभा के 'सभापति' सर्व श्री रामलोटन विश्वकर्मा, महामंत्री डॉ० मदन मोहन जी, कोषाध्यक्ष श्री दुष्यन्त शर्मा, नगर अध्यक्ष श्री इन्द्र बहादुर विश्वकर्मा 'एडवोकेट', नगरमंत्री डॉ० अरूण शर्मा, कोषाध्यक्ष महेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, श्रीमती नीतू विश्वकर्मा अध्यक्ष मंत्री राखी शर्मा, कोषाध्यक्ष सुनीता विश्वकर्मा महिला सभा एवं समस्त शुभचिंतकों, लेखकों, कवियों, विज्ञापन दाताओं, दान-दाताओं प्रेस कर्मियों एवं पुनः सभा के कार्यकारी परिषद के सदस्यों का विशेष रूप से साभार धन्यवाद करता हूँ। किसी भी त्रुटि के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। अप्रकाशित रचनाएं आगमी योग्य है।

'ॐ श्री शांतिः, शान्तिः, शान्तिः'

संस्था के लक्ष्य हेतु यात्रा

कोई भी संस्था चाहे वह सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक या आध्यात्मिक जीवन से संबंधित हो, वह मानवीय जीवन की एक महत्वपूर्ण अपरिहार्य इकाई होती है। उसके अस्तित्व हेतु भौतिक आकारगत संरचना एवं भौतिक वस्तुएं आवश्यक है। किन्तु किसी भी संस्था के मूल्यों को जीवन्त रखने के लिये उसका संरक्षण एवं संवर्धन करने के लिये शुभ संकलित मनस्वियों की ऊर्जा ही महत्वपूर्ण घटक है। मनस्वी का तात्पर्य जो श्रेष्ठ विचार से युक्त, दृढ़ निश्चयी, स्थिर चित्त एवं शुभ भावों से पूरित हो। निष्ठावान मनस्वियों के अभाव में कोई भी संस्था विरासत में मिली स्थूल एवं सूक्ष्म थाती खो देती है और इतना ही नहीं वह आगे आने वाली पीढ़ी को देने के लिए रिक्त एवं निःशेष हो जाती है।

भारत के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि प्राचीन काल के मन्दिर गुरुकुल एवं अन्य संस्थायें भी शिक्षा, दर्शन एवं आध्यात्म के केन्द्र थे। जैसे तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला बलभी आदि। कालान्तर में वे खण्डहरों में बदल गये किन्तु उन संस्थाओं की प्राचीन सांस्कृतिक दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विरासत को जीवित रखा। उसके संरक्षणकर्त्ताओं ने नागार्जुन, वसुबन्धु, दीपांकर, सारिपुत्र मोग्दलायन आदि असंख्य चिन्तकों ने संस्था के ज्ञान को हस्तान्तरित किया और संवर्धन किया। मानव जीवन को नित उन्नत व्यवहारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण संस्थात्मक रुप से दिया।

अब प्रश्न उठता है कि शुभ संकल्पित मनस का विकास कैसे किया जाए? इनके अनेक उत्तर हो सकते हैं किन्तु एक उत्तर यह है, कि हमें 'स्व' के भाव से निकल कर परार्थ के लिय भी कार्य करना चाहिए जीवन में किस उत्कृष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 'सजगता' 'सातत्य' 'समर्पण' 'सहयोग' 'सौहार्द' एवं सौमनस्य की आवश्यकता होती है।

यह सदगुण किसी व्यक्ति या संस्था को उच्चतम मानदण्डों की पराकाष्ठा तक पँहुचाते है। उक्त सदगुणो से व्यक्ति स्वम् तो समृद होता ही है साथ ही व संस्था एवं समाज के लिए महत्वपूर्ण संसाधन बन जाता है। सजगताः का तात्पर्य है कि जब हम किसी संस्था के लिये कार्य करे तो पहले अपनी भावना, विचारों एवं क्रियाओं का सजगतापूर्वक परिक्षण करे कि हमारे 'निम्न स्व' के कार्य परार्थ की लक्ष्य प्राप्ति में सहायक हैं अथवा बाधक। ऐसा करने पर हमारे भीतर का न्यायकर्ता उसकी जानकारी अवश्य देता है।

सातत्य— यानी निरन्तरता या अविच्छिन्नता- कभी-कभी हम भावना के क्षणिक आवेग में बहकर कार्य प्रारम्भ कर देते हैं किन्तु उसके सातत्य नहीं होता है। यदि हम सजगता से देखे तो हमारे उस कार्य की पृष्ठिभूमि में अपने व्यक्तित्व को संस्था या समाज पर मानसिक प्रक्षेपण या आरोपण करने का भाव होता है। किन्तु लक्ष्य तभी हासिल होता है जब कार्य में निःस्वार्थभाव से अनवरण स्थाई प्रयास होता है।

समर्पण— का तात्पर्य किसी श्रेष्ठ गुरु, भाव एवं लक्ष्य के प्रति अपने को प्रतिबद्ध व्यक्ति ही संस्था के उच्च मानदण्डों का पालन करता है और नवीन उच्च मानदण्डस्थापित भी करता है जो आगामी पीढ़ी के लिये पथ-प्रदर्शक का कार्य करते है।

सहयोग— के सम्बन्ध में जे.कृष्णमूर्ति का कथन था कि व्यक्तिगत बौद्विकता से बड़ी सामाजिक बौद्विकता है। संसार में श्रेष्ठतम कार्यों को सम्पन्न करने के लिये सहयोग एक अपरिहार्य घटक है। व्यक्तिगत कौशल से युक्त विभिन्न व्यक्ति संस्था के लिए वरदान स्वरूप होते हैं। अतः सामूहिक सहयोग से लक्ष्य प्राप्ति सुगम हो जाती है। अतः किसीभी कार्य में संस्था के सदस्यों के परामर्श को आमन्त्रित करना चाहिए।

सौहार्द एवं सौमनस्य— संस्था एवं संगठन में एक दूसरे के प्रति मैत्री एवं बंधुत्व भाव ही सौहार्द है। द्वेश या घृणा के नकारात्मक भाव को दूरकरके सकारात्मक भाव को रखने से ही एक संस्था निरन्तर प्रगति कर सकती है। विश्वकर्मा पॉचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज अपनी प्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली द्वारा नव निर्वाचित कार्यकारिणी को अपनी प्राचीन मन्दिर, धर्मशालाओं को बेहतर रूप से प्रबन्धित करने का लक्ष्य विश्वकर्मा समाज ने दिया है। विश्वकर्मा पॉचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के अन्तर्गत आने वाले सभी प्राचीन श्री भगवान विश्वकर्मा मन्दिर एवं धर्मशालाएं आज अपने अस्तित्व में है जो इसके संस्थापक एवं समर्पित सदस्यों की सजगता, सातत्य, प्रयास, समर्पण, सहयोग, सौहार्द एवं सौमनस्य का प्रतिफल है।

श्री राम लोटन विश्वकर्मा
सभापति
विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा
प्रयागराज

मिल जुल के आओ एक बज्म हम सजाएँ
एक दीप तुम जलाओ एक दीप हम जलाएँ।

हम कौन थे? क्या हो गये.....



डॉ0 सन्तलाल विश्वकर्मा
भाषा सलाहकार

किसी भी समाज की प्रगति का आधार समता, ममता, एकत्व, आर्थिक और शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर आकलित करना ही समीचीन माना जाता है। इनसे इतर अपने अतीत के गौरव-गान, पौराणिकता, इतिहास, उपलब्ध साहित्य और पूर्वजों की उपलब्धियों के द्वारा भी समाज ऊर्जस्वित होता रहता है। हम सबका विश्वकर्मावंशीय भरा-पूरा परिवार इन सबको आवेष्टित करता हुआ व्यष्टि से समष्टि तक ज्ञान-विज्ञान सम्पन्न, सनातन धर्मी साथ ही कर्म के सिद्धांत को व्यावहारिक रूप प्रदान करके संसार के अन्य समाज के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता था। हम भाग्य! हमारे वर्तमान समय में वही विश्वकर्ता समाज पाँच भागों में बिखर कर, आर्थिक रूप से विपन्न होकर विद्या और तकनीक में संसार की दौड़ में पीछे हो गया है। कभी अपने कला-कर्म-कौशल से विस्मित कर देने वाला विश्वकर्मा वंश जैसे श्री हीन और ठूँठ हो गया है।राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की यह पंक्ति 'हम कौन थे? पुनः 'क्या हो गये?' और कितनी अधोगति को हम प्राप्त होंगे 'और क्या होंगे अभी?' पर हम सबको विचार करना ही पड़ेगा। 'शानदार था भूत' अपने अतीत से हम प्रेरित तो हो सकते हैं लेकिन इसी के सहारे आत्ममुग्धता से ग्रसित होकर अकर्मण्य बने रहे तो प्रकट है कि हम प्रगति पंथ पर नहीं बढ़पायेंगे। क्योंकि अतीत आदरणीय है किन्तु स्वीकार्य नहीं है।

यह सार्वकालिक और सार्वभौमिक सत्य है कि अखिल ब्रह्माण्ड में दैवीय शक्ति सम्पन्न भगवान श्री विश्वकर्मा किसी न किस रूप में अपनी रचनात्मक शक्ति के कारण यत्र-तत्र-सर्वत्र विराजमान हैं। साथ ही सर्वसमाज द्वारा संपूज्य भी। हमारे अलौकिक ग्रंथों वेद आदि में भगवान विश्वकर्मा का गुणगान है। हम सब को इनका वंशज होने के नाते अपने अंदर देवत्व का गुण अनुभव करते हुए अपनी गौरवशाली परम्परा को देश-काल और परिस्थितियों के अनुसार अद्यतन होकर आगे बढ़ाना चाहिए।

कहते हैं जिस समाज के लोगों को आगे बढ़ाना हो तो निर्बलों का हाथ पकड़कर सबल जन ऊपर खींचते हैं। यदि पीछे ले जाना हो तो लोग टाँग खींचते हैं। निवेदन इतना है कि हमारे विश्वकर्मा समाज के सक्षम लोग अपने निर्बल भाइयों का हाथ पकड़ लें। शहरों में कुछ स्वजातीय बंधु शिक्षित और सम्पन्न हैं, उन्हें अपनी दृष्टि ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रहे अपने भाईयों पर डालनी चाहिए। एक देहाती कहावत है 'गुड़ की बाढ़ी चींटा खायें।' बस इतना ही सहयोग हो जाये तो वह दिन दूर नहीं जब हमारे समाज में भी चैतन्यता आ जायेगी। जिस समाज की समृद्ध विरासत रही हो, वह समाज स्वपेटपालक बनकर जी रहा है, यह विश्वकर्मा समाज के कर्णधारों के लिए एक चुनौती है। जिस दिन विश्वकर्मा वंशज 'हम कौन थे' से आहत होकर प्रबल जिजीविषा के साथ अपने स्वत्व को पहिचान लेंगे उसी दिन यह समाज अँगडाई लेकर खड़ा होकर अपने अधिकार प्राप्त कर लेगा।

हमारे समाज की चौधराहट बार-बार यह कहती है कि हम पाँच भाई एक ही हैं। मेरा विनम्र कथन यह है कि क्या इन पाँचों में आज तक एकत्व आया अथवा रोटी-बेटी का संबंध हुआ। क्या पाँच भाइयों के नुमाइन्दे एक साथ मंच पर कभी बैठे और सबको एक करवाये या राजनैतिक रोटियाँ ही सेंकते रहे! सत्य तो यह है कि हमारे पांचों भाई एक होना ही नहीं चाहते। इनमें भी श्रेष्ठ जाति होने का दावा होता है। दुःख तो इस बात का है कि आज तक हम बढ़ई और लुहार को जो एकदम सन्निकट हैं उन्हें एक न कर सके। रोटी-बेटी का संबंध न करा पाये। अन्य को समेटना तो दूर की बात है। जिस दिन हमारे समाज के नेतागण इन पांचों भाइयों को जोड़कर रोटी-बेटी का संबंध करवा देंगे, अथवा स्वयं ऐसा अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर देंगे, उसी दिन विश्वकर्मा वंश की राजनीतिक भागीदारी को कोई रोक नहीं पायेगा। मैं देखता हूँ कि विश्वकर्मा नाम के हजारों संगठन पूरे देश में हैं। यही नहीं एक प्रदेश और जिले में भी कई-कई संगठन बने हैं और इनके कई स्वयंभू प्रदेश अध्यक्ष या राष्ट्रीय अध्यक्ष भी घूमते हुए आपको मिल जायेंगे। इनका विश्वकर्मा समाज की भलाई से कोई लेना-देना नहीं है। इनका उद्देश्य होता है कि प्रदेश भर के विश्वकर्मा को एक स्थान पर इकट्ठा करके अपने जन समर्थन को दिखाकर सत्ता में किसी पद पाना होता है। होना तो यह चाहिए था कि अखिल भारतीय स्तर उपशाखाएं न्यायपंचायत स्तर अथवा ब्लॉकस्तर तक हों। जिस दिन यह केन्द्रीयकृत व्यवस्था हो जायेगी तो आपकी शक्ति का आभास लखनऊ नहीं दिल्ली में भी होने लगेगा।

आज समय आ गया है कि विश्वकर्मा समाज आधुनिक तकनीक को पकड़े। नौकरी करके नौकर न बने स्वरोजगार करके मालिक बने। बच्चे अपनी रूचि के अनुसार शिक्षा ग्रहण करें और रूचि के क्षेत्र में आगे बढ़े। प्रायः दखेने में आ रहा है कि अपने समाज में कुरीतियाँ और नशाखोरी की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जो प्रगति में बाधक है, स्वस्थ परम्परायें और मान्यताएं अपनानयें। विज्ञान सम्मत युग में चमत्कारों के चक्कर में न रहें। परस्पर ईर्ष्या-द्वेष से दूर रहकर भाई-चारे को बढ़ावा दें और सब प्रकार से विश्वकर्मा समाज आगे बढ़े, ऐसा सद्प्रयास होना चाहिए।

देवास्त्र टैक्टफुल सलूसन्स (प्रा.लि.)
नई दिल्ली 115, सेक्टर – 03 दूरभाष नगर, रायबरेली (उ0प्र0)
मो0: 09451073802

विश्वकर्मा मंदिर निर्माण हेतु
श्री शिव प्रसाद राउत के द्वारा भू दान किया गया था।



स्व. पूज्य शिव प्रसाद राउत

Ex. Senior Superintendent
Accountant-General, N.W.P. & Oudh

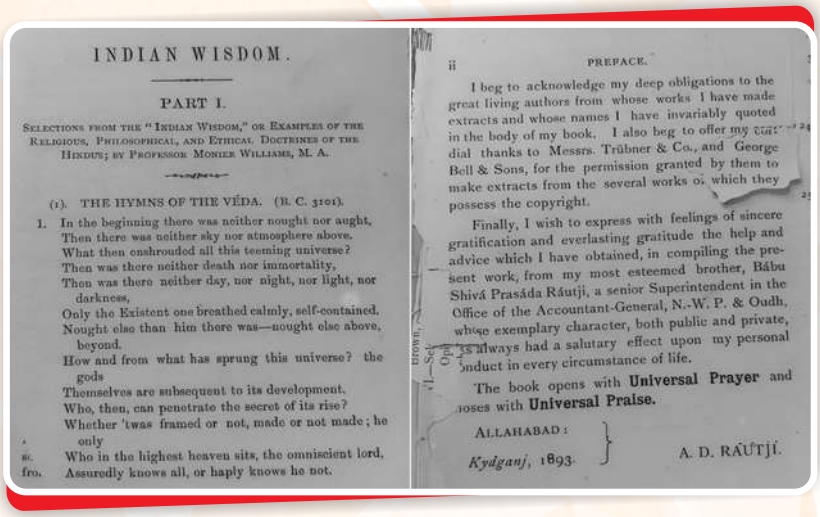

INDIAN WISDOM.

PART I.

SELECTIONS FROM THE "INDIAN WISDOM," OR EXAMPLES OF THE RELIGIOUS, PHILOSOPHICAL, AND ETHICAL DOCTRINES OF THE HINDUS; BY PROFESSOR MONIER WILLIAMS, M. A.

(1). THE HYMNS OF THE VÉDA. (B. C. 3101).

1. In the beginning there was neither nought nor aught,
Then there was neither sky nor atmosphere above.
What then enshrouded all this teeming universe?
Then was there neither death nor immortality,
Then was there neither day, nor night, nor light, nor darkness,
Only the Existent one breathed calmly, self-contained.
Nought else than him there was—nought else above, beyond.
How and from what has sprung this universe? the gods
Themselves are subsequent to its development.
Who, then, can penetrate the secret of its rise?
Whether 'twas framed or not, made or not made; he only
sc. Who in the highest heaven sits, the omniscient lord,
fro. Assuredly knows all, or haply knows he not.

ii PREFACE.

I beg to acknowledge my deep obligations to the great living authors from whose works I have made extracts and whose names I have invariably quoted in the body of my book. I also beg to offer my cordial thanks to Messrs. Trübner & Co., and George Bell & Sons, for the permission granted by them to make extracts from the several works of which they possess the copyright.

Finally, I wish to express with feelings of sincere gratification and everlasting gratitude the help and advice which I have obtained, in compiling the present work, from my most esteemed brother, Bábu Shivá Prasáda Rátji, a senior Superintendent in the Office of the Accountant-General, N.-W. P. & Oudh, whose exemplary character, both public and private, has always had a salutary effect upon my personal conduct in every circumstance of life.

The book opens with **Universal Prayer** and closes with **Universal Praise.**

ALLAHABAD:
Kydganj, 1893. A. D. RÁUTJÍ.

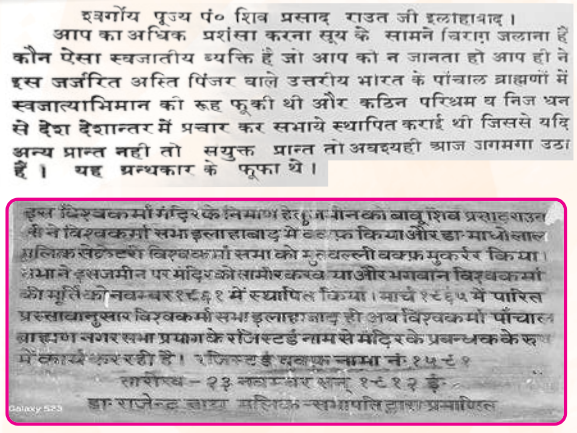

स्वर्गीय पूज्य पं० शिव प्रसाद राउत जी इलाहाबाद।
आप का अधिक प्रशंसा करना सूर्य के सामने चिराग़ जलाना है कौन ऐसा स्वजातीय व्यक्ति है जो आप को न जानता हो आप ही ने इस जर्जरित अस्थि पिंजर वाले उत्तरीय भारत के पांचाल ब्राह्मणों में स्वजात्याभिमान की रूह फूकी थी और कठिन परिश्रम व निज धन से देश देशान्तर में प्रचार कर सभाये स्थापित कराई थी जिससे यदि अन्य प्रान्त नहीं तो संयुक्त प्रान्त तो अवश्यही आज उगमगा उठा है। यह ग्रन्थकार के फूफा थे।

इस विश्वकर्मा मंदिर के निर्माण हेतु भूमि को बाबू शिव प्रसाद राउत ने विश्वकर्मा सभा इलाहाबाद में दान किया और डा० माधोलाल मलिक सेक्रेटरी विश्वकर्मा सभा को मुख्तारनामा बक्फ मुकर्रर किया। सभा ने इसजमीन पर मंदिर को तामीर कराया और भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति को नवम्बर १९६१ में स्थापित किया। मार्च १९६५ में पारित प्रस्तावानुसार विश्वकर्मा सभा इलाहाबाद ही अब विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण नगर सभा प्रयाग के रजिस्टर्ड नाम से मंदिर के प्रबन्धक के रू में कार्य कर रही है। रजिस्ट्रेशन संख्या नं० १५८१
साक्षर – २३ नवम्बर सन् १९१२ ई०
डा० राजेन्द्र लाल मलिक सभापति द्वारा प्रमाणित

कृतज्ञता एवं संदेश

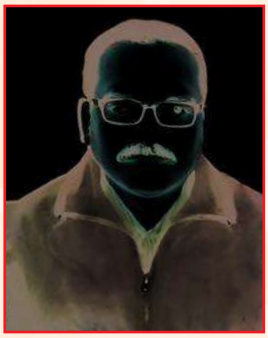

सतेन्द्र देव राउत
Sr Audit Officer (Retired)
PAG (Audit -I)UP
Prayagraj
Mob.: 9450613079

यह हमारे लिए अत्यंत गौरव और सौभाग्य का विषय है कि श्री विश्वकर्मा भगवान का यह पावन मंदिर हमारे पूर्वजों द्वारा श्रद्धापूर्वक दान की गई भूमि पर निर्मित है। यह भूमि केवल एक दान नहीं, बल्कि हमारे पूर्वजों की आस्था, त्याग और समाज के प्रति उनकी दूरदर्शी सोच की अमूल्य धरोहर है।

इस पवित्र मंदिर के माध्यम से भगवान विश्वकर्मा जी की आराधना के साथ-साथ हमारी संस्कृति, परंपरा और सामाजिक एकता को भी निरंतर मजबूती मिल रही है। हम अपने पूर्वजों के इस पुण्य कार्य को नमन करते हुए संकल्प लें कि इस धरोहर को सुरक्षित रखते हुए आने वाली पीढ़ियों तक इसकी गरिमा और परंपरा को पहुँचाएंगे।

भगवान विश्वकर्मा जी की कृपा सभी पर बनी रहे तथा समाज में सुख शांति, एकता और समृद्धि का संचार हो।

जय श्री विश्वकर्मा भगवान!

अद्वैत वेदांत - वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय मेधा का अतुल्य योगदान



प्रो० आर०एन० लोहकर
पूर्व प्रोफेसर
अर्थशास्त्र विभाग, ई.वि.वि. प्रयागराज

राम नारायण लोहकरअद्वैत वेदांत के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय मेधा का अवदान भारतीय ज्ञान-परंपरा की सार्वभौमिकता और उसकी दार्शनिक ऊँचाइयों को समझने के लिए इतिहास में एक ही नाम 'भारत की मेधा' (The Genius of India) शीर्षक से दो अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तकें मिलती हैं। प्रथम कृति 'The book of Indian Wisdom' नाम से १८७५ में लंदन से प्रकाशित हुई, जिसके लेखक ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत प्रोफेसर सर मोनियर-विनियम्स थे। इसी वैचारिक भावभूमि पर दूसरी अमूल्य कृति १८९४ में इंडियन प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई, जिसके प्रणेता श्रद्धेय डॉ. अलोपी दिन राउतजी थे। इन दोनों मनीषियों ने भारतीय उपनिषद् ज्ञान और सूक्तों को वैश्विक बौद्धिक चेतना की पराकाष्ठा के रूप में स्वीकार किया है। व्याख्या का साम्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण दोनों विद्वानों की भाषायी शैली में संस्कृत के प्रति अगाध सम्मान, प्रकांड पांडित्य और वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दों की सटीकता दिखाई देती है। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त (सृष्टि उत्पत्ति का रहस्य) और पुरुष सूक्त (विराट पुरुष की कल्पना) पर दोनों एक धरातल पर खड़े मिलते हैं. दोनों इस बात से सहमत हैं कि संपूर्ण ब्रह्मांड किसी एक ही परम चेतना का वितान है, जहाँ जड़-चेतन सब परस्पर संबद्ध हैं। मोनियर-विलियम्स जहाँ इसे पाश्चात्य दर्शन के 'सर्वेश्वरवाद' (Pantheism) और आधुनिक विज्ञान के बिग-बैंग तथा विकासवाद के आरंभिक तार्किक सूत्र के रूप में सराहते हैं, वहीं राउतजी इसे ऋषियों की समाधि अवस्था की अनुभूतिमूलक अभिव्यक्ति मानते हैं। तार्किक विश्लेषण बनाम अद्वैत अनुभूति (मूल अंतर) यद्यपि दोनों की भाषा समरूप है, किंतु 'भाव की गहराई' में दोनों के मार्ग सर्वथा भिन्न हो जाते हैं। प्रोफेसर विलियम्स एक पाश्चात्य समीक्षक (Observer) की भांति अध्यात्म को एक 'बाहरी वस्तु' (Object) की तरह देखते हैं। वे बुद्धि और तर्क की कसौटी पर उपनिषदों की वैज्ञानिकता सिद्ध करते हैं, जिसके कारण वे उपनिषदों के महावाक्यों ('तत्त्वमसि' और 'अहं ब्रह्मास्मि') की तार्किक विवेचना तो करते हैं, परंतु जीव और ब्रह्म के पूर्ण एकाकार को पूरी तरह आत्मसात नहीं कर पाते। इसके विपरीत, डॉ. अलोपी दिन राउतजी का भाव पूरी तरह आदि शंकराचार्य के केवलाद्वैत वेदांत के रंग में रंगा है। राउतजी यह भली-भांति प्रतिपादित करते हैं कि द्वैत और अद्वैत की भ्रांति केवल 'आत्मा' (नित्य शुद्ध) और 'जीवात्मा' (कर्मों से बद्ध) के भेद को न समझ पाने के कारण उलझती है। कर्मों से बद्ध इस जीवात्मा को शुद्ध करने के लिए निष्काम कर्म या भक्ति मार्ग से अहंकार को विगलित कर शून्य बनाना पड़ता है। राउतजी (और उनके वैचारिक समानांतर जर्मन प्राच्यविद पॉल देउसेन) उपनिषदों को केवल पढ़ने या समझने की वस्तु नहीं, बल्कि 'साक्षात्कार' का विषय मानते हैं। उनके लिए अद्वैत की आत्मा तक पहुँचने के लिए ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का भेद मिटाना अनिवार्य है। निष्कर्ष ईश उपनिषद के महामंत्र 'ईशावास्यमिदं सर्वं' की व्याख्या करते हुए राउतजी स्पष्ट करते हैं कि जब संपूर्ण जगत में एक ही परम तत्व व्याप्त है, तो 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' का अर्थ केवल भौतिक त्याग नहीं, वरन कर्तापन के अहंकार का विसर्जन है। जब अहंकार विगलित होकर शून्य हो जाता है, तब गोस्वामी तुलसीदास जी की पंक्तियाँ चरितार्थ होती हैं-"गिरा अरथ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न। "वाणी और उसके अर्थ की तरह, लहर और जल की तरह, जीव और ब्रह्म की यह अभिन्नता ही 'भारत की मेधा' का वह सर्वोच्च शिखर है, जिसे राउतजी ने अपनी अमर कृति में प्रतिपादित किया है। इलाहाबाद की इसी पावन धरती से उपजा राउतजी का यह दर्शन आज भी संपूर्ण विश्व को आत्मिक एकत्व का मार्ग दिखाने में पूर्णतः समर्थ है।

विश्वकर्मा समाज की चुनौतिया एवं संभावनाएं

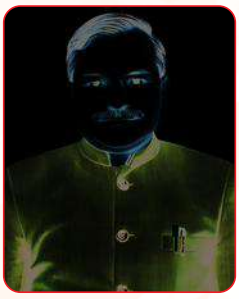

डॉ० सन्तोष कु० विश्वकर्मा
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग

हमारे विश्वकर्मा समाज का जनमानस अत्यन्त प्रभुत्वशाली रहा है। भगवान विश्वकर्मा की कृपा एवं अनुकम्पा से अपने ज्ञान एवं विज्ञान के द्वारा प्रत्येक युग में प्रतिस्थापित रहा है। जीवन के विभिन्न रंगों में रंगा हुआ यह समाज में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ा है। भगवान विश्वकर्मा हमारे आराध्य देव ने अपनी अनूठी कला से पुष्पक विमान का निर्माण कर 'एक नई तकनीकी को कई युगों पहले ही जनमानस के बीच रचना में अंगीकार कर दिया था। विश्वकर्मा वंशजों में अनेक वैज्ञानिकों ने अनेक तकनीकी उपलब्धियाँ हासिल कर जीवन को एक नया रंग प्रदान किया है। हमारे समाज में कला और संस्कृति के पुरोधा माने जाने वाले महान श्री अरुण योगिराज जी ने अपनी कला से सांस्कृतिक धरोहर के रूप में 'श्रीरामलला की मूर्ति को अपनी छेनी और हथौड़ी के द्वारा उस मूर्ति में ऐसा रंग भरा की कि जन-जन के हृदय में बसे राम की प्रतिमूर्ति बनाकर अयोध्या में प्रतिस्थापित कर अपनी अनूठी कला का अनुपम परिचय दिया है ऐसे महान कलाकार को हमारा समाज ही नहीं देश ही नहीं अपितु विश्व में उनका नाम देरीप्यमान है। धर्म, विज्ञान, कला और आध्यात्म की एक उत्कृष्ट दिशा को रेखांकित करने का प्रयास किया है। कलाकार को हमारा समाज ही नहीं देश ही नहीं अपितु विश्व में उनका नाम देरीप्यमान है। धर्म, विज्ञान, कला और आध्यात्म की एक उत्कृष्ट दिशा को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

हमारे समाज की एक विडम्बना भी रही है कि मालिक, सामंत और राजाओं ने गरीब तबके के लोगों को अपने षडयन्त्र में कसकर आजाद भारत में भी लोगों को गुलाम बनाये रखने की पराकाष्ठा चरम सीमा पर थी। परन्तु हमारे समाज के बीच-वीरांगनाओं ने एक छत्र साम्राज्य पर राज भी किया है। जम्मू कश्मीर की महारानी दिद्दा ने अपने पौरुष और शक्ति से अंग्रेजों को कई बार मात दी थी। उनकी शक्ति और सामर्थ्य के आगे कई शासक नतमस्तक हो गये थे। महारानी दिद्दा विश्वकर्मा की सेना ने अपना झंडा सदैव ऊँचा रखाा था। अनेक राजाओं ने इनके सामने हार मान लीइससे पता चलता है कि हमार इतिहास कितना गौरवशाली रहा है। हम सबको गर्व होना चाहिए कि हम उस वीरांगना की संतान हैं जिन्होंने कई साम्राज्यों को अपना लोहा मनवा लिया था। मैदान छोड़कर रण से भाग गये थे और ज्यादा से ज्यादा रण में मारे गये थे। हमारे विश्वकर्मा वंशजों ने कभी किसी के समाने हाथ कभी नहीं फैलाया। अपने ज्ञान, कौशल और पराक्रम से युगो-युगों से अपनी यश और कीर्ति का पताका फहराते रहे हैं। साहित्यिक क्षेत्रा में भी प्रभाकर माचवे ने अपनी रचना के माध्यम से समाज को ही सर्वसमाज के एक नई दिशा देने का कार्य किया था। हमें अपने महानक्रान्तिकारियों से साहित्यकारों से, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से सीखना होगा। उनके गौरवशाली इतिहास को पढ़ना होगा। उनसे प्ररेणा लेनी होगी कि किन विषम परिस्थितियों में भी जीवन को सुगम बनायाथा। जो समाज अपना इतिहास नहीं जानेगा निश्चित रूप से उसकी दिशा एवं दशा दोनों प्रभावित होंगे।

इसलिए हम सबको मिलकर समाज की उन चुनौतियों का सामना करना होगा, संगठित रहना होगा तथा अपने आत्मबल पर विश्वास करना होगा तभी सामाजिक स्तर ऊँचा होगा और उन्हीं चुनौतियों से एक नई क्रांति की चिनगारी जल उठेगी जिसमें सभी के विचारों से समाज के अग्रसर होने की सम्भावनाएँ प्रबल हो जायेंगी और जीवन में समरसता के भाव जागृत होने लगेंगे। कंटक भरे जीवन का पथ सुगम और सरल हो जायेगा। हाँ! अब इतना परिवर्तन जरूर हो गया है कि सभी लोगों के विचार विमर्श में आपसी भाई-चारे का भाव जागृत हो उठा है। युवा पीढ़ी पढ़लिकर विभिन्न क्षेत्रों में उच्च पदों पर आज विराजमान हैं। आज विश्वकर्मा भगवान के पुत्रों ने आपस में संगठित होकर राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कदम से कदम मिलाकर प्रगतिपथ पर आगे बढ़ते रहे है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आज हम सबकी सजगता ही आने वाली पीढ़ियों को एक नया मार्ग प्रशस्त करेगी और जीवन को सरल और सुगम बनायेंगी।

डॉ० सन्तोष कुमार विश्वकर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
पंचशील पी०जी० कॉलेज, इटौरा-बुजुर्ग, रायबरेली (उ०प्र०)
मो०: 9452528107
dnishwakarmr07@gmail.com

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज
संस्थापक सदस्यगण



सभापति

श्री श्रीनाथ शर्मा

प्रधानाचार्य हंडिया इण्टर कॉलेज इलाहाबाद

पुत्र स्व० श्री राम औतार शर्मा

ग्राम - बाला, पोस्ट - हंडिया, इलाहाबाद



महामंत्री

श्री राम दुलारे विश्वकर्मा

पुत्र स्व० श्री गया दीन विश्वकर्मा

F1ए सेन्ट्रल इक्साइज कॉलोनी 6 म्योर रोड, इलाहाबाद



मंत्री अर्थ

श्री हीरा लाल शर्मा

पुत्र स्व० श्री ठाकुर दीन शर्मा

फतेहपुर कायस्थान पो०–मुण्डेरा मंशुराबाद, इलाहाबाद



कोषाध्यक्ष
श्री राम प्यारे विश्वकर्मा
पुत्र स्व० श्री जानकी विश्वकर्मा
618, के0एल0 कीटगंज, इलाहाबाद



कार्य कारणी सदस्य
श्री गजाधर प्रसाद संडिल
पुत्र स्व० श्री मुरलीधर संडिल
10, टी0पी0 सप्रू रोड, इलाहाबाद



कार्य कारणी सदस्य
श्री बुद्धदेव विश्वकर्मा
पुत्र स्व० श्री शिवजतन विश्वकर्मा
ग्रा परनीपुर, पो0–शुकुलपुर, इलाहाबाद



कार्य कारणी सदस्य
श्री शिवमूरत शर्मा
पुत्र स्व० श्री शिवशंकर लाल शर्मा
ग्राम–पतुलकी, पो0–सिकन्दरा, इलाहाबाद



कार्य कारणी सदस्य
श्री बदलूराम शर्मा
पुत्र स्व० राम औतार शर्मा
ग्राम व पो0 शिवगढ़, इलाहाबाद

आप सभी सामाज की महान विभूतियो द्वारा विश्वकर्मा समाज की सार्वजनिक धरोहर (श्री भगवान विश्वकर्मा मदिंर, धर्मशाला एवं भवन) के प्रबन्धन हेतु 17 दिसम्बर 1965 को सोसाईटी रजिट्रेशन एक्ट नवम्बर 21 सन् 1860 ई0 के अंतरगत फर्म्स सोसाईटी चिट्स कार्यलय कानपुर से पंजिकृत कराया गया था संस्था पंजियन सं0 989/1965-66 है जिसमें विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज का मुख्यालय श्री विश्वकर्मा मंदिर 380/328, नई बस्ती कृष्णा नगर शंकर लाल भार्गव मार्ग, कीडगंज, प्रयागराज था।

विश्वकर्मा पॉचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज की प्रथम आम सभा बैठक 1965 के कुम्भ मेला मे संगम तट पर हुयी थी जिसके मुख्य अतिथी के रूप मे कैलाश नाथ काटजू पूर्व गृहमंत्री जी थे।



फोटो सन् 1965 कुम्भ मेला





सिटी मजिस्ट्रेट श्री जे0एन0 विश्वकर्मा जी
द्वारा राष्ट्रपति जी का माल्यार्पण



डॉ0 ओ0पी0 विश्वकर्मा जी
द्वारा राष्ट्रपति जी का माल्यार्पण



श्री देवी प्रसाद शर्मा जी
द्वारा राष्ट्रपति जी का माल्यार्पण

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा सर्व श्री राम दुलारे विश्वकर्मा, हरिशंकर विश्वकर्मा, देवी प्रसाद शर्मा, लाल जी शर्मा, प्रदीप विश्वकर्मा, डॉ0 ओ0पी0 विश्वकर्मा जी सिटी मजिस्ट्रेट श्री जे0एन0 विश्वकर्मा जी व बड़ी संख्या में विश्वकर्मा प्रबुद्धजनो ने भारत के राष्ट्रपति मा0 श्री ज्ञानी ज़ैल सिंह जी का प्रयाग आगमन पर सर्किट हाउस इलाहाबाद में मुलाकात कर स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

राष्ट्रपति मा0 श्री ज्ञानी ज़ैल सिंह जी ने समस्त विश्वकर्मा समाज से आत्मीय ढ़ग से मुलाकात की और स्वयं को विश्वकर्मा वंशी बताते हुये कहा आप भले ही रूपया कितना भी कमालो परन्तु समग्र समाज के बीच जब तक आपकी राजनीतिक पहचान नहीं बनेगी तब तक विश्वकर्मा समाज को संघर्ष करना होगा। इस लिए आप संगठित हो।



अविस्मरणीय क्षण के साक्षी
डॉ ओ0पी विश्वकर्मा
M.B.B.S., M.S. (Ortho)



अविस्मरणीय क्षण के साक्षी
श्री प्रदीप विश्वकर्मा
अधिक्षक
केंद्रीय जी.एस.टी. लखनऊ

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज

संस्था का उद्देश्य

(क) समस्त विश्वकर्मा वंशियों तथा इनकी समस्त उपशाखाओं एवं गोत्रों के लोगों का एक सूत्र बद्ध संगठन स्थापित करना॥

(ख) सामाजिक कल्याण हेतु स्वजाति में प्रेम पूर्ण एवं अनुशासन बद्ध संगठन स्थापित करके भावनात्मक एकता उत्पन्न करना॥

(ग) स्वजातीय समााज में (अ) शिक्षा प्रसार (आ) आर्थिक कल्याण (इ) नारी जागरण (ई) सामाजिक कुरीतियों का निवारण एवं शारीरिक, मानसिक, आत्मिक सभी प्रकार से मानवीय प्रगति हेतु प्रयास करना॥

(घ) स्वाजातीय लोगों के सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक हितों का ध्यान रखना तथा उनकी रक्षा हेतु कार्य करना।

(ङ) शिल्प कला की सर्वांगीण उन्नति के लिये सक्रिय प्रयास करना और इसकी पूर्ति के लिये विद्यालय की स्थापना करना।

(च) साहित्य संकलन एवं प्रकाशन के द्वारा समाज को उत्थान एवं विकास के पथ पर अग्रसर करना तथा इस हेतु पुस्तकालय एवं वाचनालय स्थापित करना।

(छ) स्वजातीय अनाथ एवं असहाय लोगों की सभी प्रकार से रक्षा व सहायता करना।

(ज) स्वजातीय सार्वजनिक सम्पत्ति चल एवं अचल का उचित ढंग से प्रबन्ध एवं संचालन करना एवं उसकी रक्षा करना।

(झ) विश्वकर्मा समाज की चतुर्मुखी प्रगति के लिये कोई भी अन्य उचित कार्य करना

संस्था के उक्त उद्देश्यो को पूर्ण करने हेतु
हमारी कार्यकारिणी दृढ़ संकल्पित है।

..... महामंत्री

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज

प्रबन्ध कारिणी समिति

1965 - 1966

1.	श्रीनाथ शर्मा पुत्र स्व0 श्री रामअवतार शर्मा पता- ग्रा. व पो.- बाला हंडिया, प्रयागराज।		सभापति
2.	डॉ0 राजेन्द्र नाथ मलिक पुत्र स्व0 रसिक लाल मलिक पता- 28 महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज।	नगर	उपसभापति
3.	श्री माताबदल शर्मा पुत्र श्री महादेव शर्मा पता- भगवतपुर मनौरी, प्रयागराज।	द्वाबा	उपसभापति
4.	श्री भगवती प्रसाद शर्मा पुत्र श्री बच्चू विश्वकर्मा पता- छीतपुर के0पी. कॉलेज, प्रयागराज।	गंगापार	उपसभापति
5.	श्री मातम्बर शर्मा पुत्र श्री राम टहल शर्मा पता- ग्राम-पुरैनी, पो.- करछना, प्रयागराज		उपसभापति यमुनापार
6.	श्री रामदुलारे विश्वकर्मा पुत्र स्व0 गयादीन विश्वकर्मा पता- एफ-9 सेन्ट्रल एक्साइज कालोनी म्योर रोड़, प्रयागराज		महामन्त्री
7.	श्री हीरालाल शर्मा पुत्र श्री ठाकुरदीन शर्मा व्यवसाय पता- फतेहपुर कायस्थान मुंडेरा, प्रयागराज		मंत्री अर्थ
8.	श्री बलिकरन शर्मा पुत्र श्री देवकी शर्मा पता- ग्राम-निरिया पो.- धरवारा, प्रयागराज	सेवा	मंत्री संगठन एवं प्रचार
9.	श्री शिवशंकर शर्मा पुत्र श्री रामफल शर्मा पता- ग्राम- शेरगढ़, पो.- बेगमसराय, प्रयागराज	सेवा	मंत्री कल्याण
10.	श्री इन्द्र प्रसाद विश्वकर्मा पुत्र श्री सीताराम विश्वकर्मा पता- 250 पुराना बैरहना, प्रयागराज	सेवा	मंत्री निर्माण
11.	श्री रामप्यारे विश्वकर्मा पुत्र श्री स्व0 जानकी प्रसाद पता- 618 के0एल0 कीडगंज, प्रयागराज	सेवा	कोषाध्यक्ष
12.	श्रीराम शर्मा पुत्र श्री जैराम शर्मा पता- 20 तुलारामबाग, बैरहना, प्रयागराज	सेवा	आय-व्यय निरीक्षक
13.	श्री अहिवरण शर्मा शास्त्री पुत्री श्री रामफल शर्मा पता- शेरगढ़ बेगम सराय, प्रयागराज।	सेवा	सदस्य
14.	श्री शिवदत्त शर्मा पुत्र श्री स्व0 राम सहाय शर्मा पता- 144 चौखण्डी, कीडगंज, प्रयागराज।	सेवा	सदस्य
15.	श्री शिव मूरत शर्मा पुत्र श्री शिवशंकर लाल शर्मा पता- पतुलकी, पो.- सिकन्दरा, प्रयागराज।	सेवा	सदस्य
16.	श्री छोटे लाल शर्मा पुत्र श्री बालादीन शर्मा पता- ग्राम व पो.- जगदीशपुर पूरे चन्दा, प्रयागराज।	सेवा	सदस्य
17.	श्री ब्रह्मदीन शर्मा पुत्र श्री बाबादीन शर्मा पता- जमुनी पुर कोटवा, प्रयागराज।	सेवा	सदस्य

18.	श्री जाखूराम शर्मा पुत्र श्री बैजनाथ शर्मा पता- मानिकपुर, किसौरा, पो.- हंडिया, प्रयागराज।	कृषि	सदस्य
19.	श्री बुद्धदेव विश्वकर्मा पुत्र स्व0 शिवजतन विश्वकर्मा पता- परानीपुर, पो.- शुकुलपुर, प्रयागराज।	सेवा	सदस्य
20.	श्री राम स्वरूप पुत्र श्री बुद्धराम विश्वकर्मा पता- अजवइया, पो. नैनी, प्रयागराज।	सेवा	सदस्य
21.	श्री रामसेवक शर्मा पुत्र जोखी राम शर्मा पता- चिपापुर, पो.- सराय आकिल, प्रयागराज।	कृषि	सदस्य
22.	श्री सरजू प्रसाद शर्मा पुत्र स्व0 गोकुल प्रसाद पता- ग्राम व पो.- औसा, प्रयागराज।	कृषि	सदस्य
23.	श्री राम कलेश्वर शर्मा पुत्र श्री शिवराम शर्मा पता- अम्बावा, पो.- कड़ा, प्रयागराज।	कृषि	सदस्य
24.	श्री गोपाल जी विश्वकर्मा पुत्र श्री रामचन्द्र विश्वकर्मा पता- 319 रानी मण्डी, प्रयागराज।	व्यापार	सदस्य
25.	श्री देवन जी शर्मा पुत्र श्री शिव गुलाम शर्मा पता- 111 कटघर, प्रयागराज।	व्यापार	सदस्य
26.	श्री गजाधर प्रसाद सांडिल्य पुत्र श्री मुरलीधर पता- 10-1 टी0बी0 सप्रू रोड़, प्रयागराज।	कान्ट्रैक्टर	सदस्य
27.	श्री जगदम्बा प्रसाद शर्मा पुत्र श्री छोटे लाल शर्मा पता- बहादुरगंज, प्रयागराज।	सेवा	सदस्य
28.	श्री राम सजीवन शर्मा पुत्र श्री गंगा प्रसाद शर्मा पता- पत्थर गली, प्रयागराज।	वकील	सदस्य
29.	श्री राम सुन्दर शर्मा पुत्र श्री राम टहल पता- 5 कमला नेहरू रोड, प्रयागराज।	व्यापार	सदस्य
30.	श्री बदलू राम शर्मा पुत्र श्री राम औतार शर्मा पता- ग्राम व पो.- शिवगढ़, प्रयागराज।	सेवा	सदस्य

विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज का गठन फर्म्स सोसाइटी तथा चिट्स इलाहाबाद कार्यालय संस्था श्री विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा, इलाहाबाद पं0 989/1965-66 के स्मृति पत्र से पता चलता है कि 17/12/65 में सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट नवम्बर 21 सन् 1860 ई. के अन्तर्गत कानपुर कार्यालय से प्रथम बार कराया गया था। जिसका मुख्यालय श्री विश्वकर्मा मन्दिर 120/328 नई बस्ती शंकर लाल भार्गव मार्ग कृष्णा नगर, कीडगंज, प्रयागराज था।

!! भावभीनी श्रद्धांजलि !!

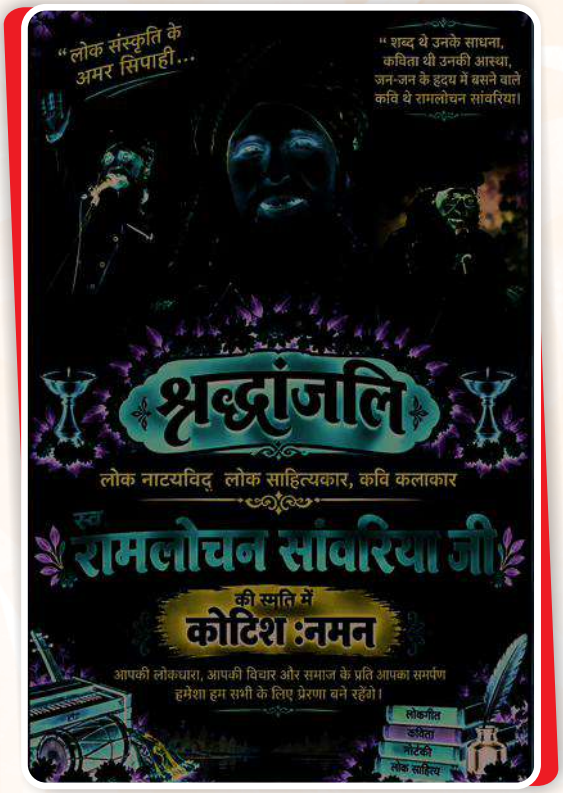

लोकविद्, नाट्य रचनाकार, लोक साहित्यकार, कवि कुल शिरोमणिस्व. बाबू जी की यादों में...आपकी यादें... आपकी बातें... आपकी डाँट—हर बात में सीख भरी थी।बच्चों की छोटी-छोटी क्रीड़ाओं को कविता में ढाल देना,किसी पल कहानी रच देना,बच्चों के साथ कउड़ा तापते हुए कहानियाँ सुनाना,और बच्चों के साथ कार्य करते हुए मेरी भी क्लास ले लेना...मित्रों के बीच ले जाना,मेरा परिचय कराना,लोक कलाओं और उनकी विविध विधाओं से परिचित कराना—आपने केवल उंगली पकड़कर चलना नहीं सिखाया,बल्कि जीवन को समझने और लोक संस्कृति को जीने की राह दिखाई।बाबू जी, आप हमारे गुरु थे, पिता थे,और सच कहूँ तो हमारे लिए सब कुछ ही तो थे।आज आप सशरीर हमारे बीच नहीं हैं,लेकिन आपकी सीख, आपकी रचनाएँ, आपकी बातेंऔर आपकी दी हुई लोक-संस्कृति की विरासतआज भी हमारे साथ चल रही है।अंतर्मन में सोचता हूँ तो दूर तक विचारों मेंबस यही स्वर गूँजता है—"सब कुछ तेरा...सब कुछ तेरा...कुछ नहीं मेरा...कुछ नहीं..."आपकी यादें, आपकी बातेंबार-बार मन से यही कहती हैं—बाबू जी... आप कहाँ हो?काश! आप आ जाते...आपकी स्मृतियों को हृदय में संजोएआपकी सीख और संस्कारों की राह पर चलते हुएआपको कोटिशः नमन।

वेदानन्द 'वेद'

द्वारा

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज



स्व. मिठाई लाल विश्वकर्मा
स्वर्गवास – 10.12.2025
संस्थापक सदस्य
प्राचीन श्री पंचमुखी भगवान
विश्वकर्मा मंदिर कीड़गंज
एवं
विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला
सभा प्रयागराज



स्व. राज जी विश्वकर्मा
स्वर्गवास – 02.05.2021
पूर्व पदाधिकारी
विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला
सभा प्रयागराज

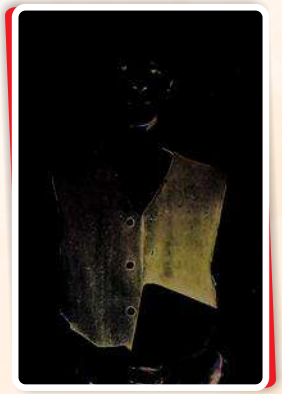

स्व. उमाशंकर विश्वकर्मा
स्वर्गवास – 15.10.2015
पूर्व पदाधिकारी
विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला
सभा प्रयागराज

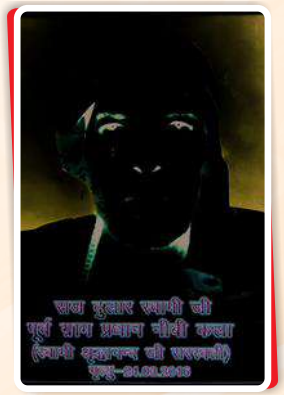

स्व. राज दुलार स्वामी जी
पूर्व ग्राम प्रधान
स्वर्गवास – 24.03.2016
पूर्व पदाधिकारी
विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला
सभा प्रयागराज

द्वारा

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज

"सपनों को संकल्प बनाइए, संकल्प को साधना और साधना को सफलता"



नेहा पाँचाल
उप जिलाधिकारी

संदेश

जीवन में कुछ सपने ऐसे होते हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए केवल प्रतिभा नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प, निरंतर परिश्रम और पारिस्थितियों से संघर्ष करने का साहस आवश्यक होता है। सिविल सेवा जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी मेरे लिए भी केवल एक परीक्षा की तैयारी नहीं थी, बल्कि स्वयं पर विश्वास बनाए रखते हुए निरंतर आगे बढ़ने की एक चुनौतीपूर्ण यात्रा थी।

विवाह के पश्चात् जीवन की जिम्मेदारियाँ और प्राथमिकताएँ स्वाभाविक रूप से बढ़ जाती हैं। परिवार, दायित्व और अध्ययन इन सभी के बीच समय का संतुलन बनाना आसान नहीं होता। कई बार थकान होती है, समय कम पड़ता है और मन में यह प्रश्न भी उठता है कि क्या अपने लक्ष्य तक पहुँचना संभव होगा। किंतु मैंने यह अनुभव किया कि परिस्थितियाँ हमारी गति को प्रभावित कर सकती हैं, हमारे संकल्प को नहीं। छोटे–छोटे समय का सदुपयोग, नियमित अध्ययन, अनुशासन और परिवार के सहयोग ने इस यात्राा को आगे बढ़ाने की शक्ति दी।

मेरी यात्रा ने मुझे सिखाया कि सफलता किसी एक दिन की उपलब्धि नहीं, बल्कि प्रतिदिन स्वयं को अपने लक्ष्य के लिए समर्पित करने का परिणाम है। असफलताएँ हमें रोकने के लिए नहीं, बल्कि हमारी रणनीति को बेहतर बनाने और हमारे आत्मविश्वास को मजबूत करने के लिए आती हैं।

आज मैं अपने सभी युवा पीढ़ी से कहना चाहूँगी कि अपने सपनों को कभी अपनी परिस्थितियों, विवाह अथवा सामाजिक अपेक्षाओं की सीमाओं में न बाँधे। शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आपको केवल एक पद नहीं देती, बल्कि आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और समाज में सार्थक योगदान देने का अवसर प्रदान करती है। विवाह या पारिवारिक दायित्व जीवन की यात्रा का हिस्सा हैं, आपकी आकांक्षाओं का अंत नहीं।

साथ ही, मैं युवा पीढ़ी से आह्वान करती हूँ कि वे अपनी ऊर्जा, प्रतिभा और ज्ञान को राष्ट्र निर्माण की दिशा में लगाएँ। एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण केवल नीतियों से नहीं बल्कि जागरूक, शिक्षित, संवेदनशील और उत्तरदायी युवाओं से होता है। आप प्रशासनिक सेवाओं में आएँ, शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, उद्यमिता, रक्षा या किसी अन्य क्षेत्र में जाएँ – अपने कार्य को राष्ट्र सेवा का माध्यम बनाएँ।

युवाओं के सपनों में राष्ट्र का भविष्य छिपा है। इसलिए लक्ष्य बड़ा रखिए, प्रयास ईमानदार रहिए और कठिनाइयों के सामने अपने कदम कभी मत रोकिए।

रास्ते कठिन हों तो हौसला और मजबूत कीजिए,
क्योंकि मंज़िल उन्हीं को मिलती है,
जो परिस्थितियों से नहीं, अपने
संकल्प से पहचाने जाते हैं।''

विश्वकीर्तिमान रच कर उँचा किया भारत का मान

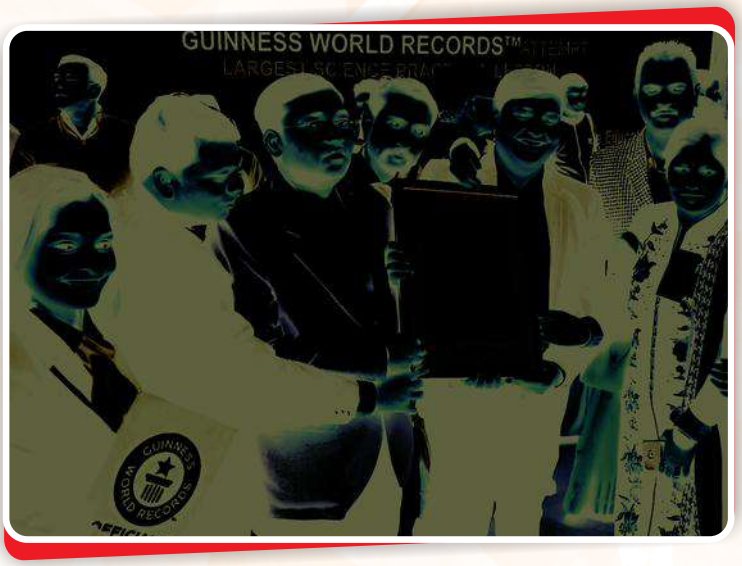

इं. स्वप्निल कुमार शर्मा
पुत्र श्री गोपाल स्वरूप
श्रीमती उर्मिला शर्मा
प्रयागराज (उ.प्र.)

इं0 स्वप्निल कुमार शर्मा एक सिविल इंजीनियर विशेषज्ञ एवं शोधकर्ता है, जो जल संरक्षण, भूजल, प्रबंधन, जल गुणवत्ता तथा जल संसाधनों के वैज्ञानिक अध्ययन एवं तकनीकी समाधान के क्षेत्र में निरन्तर कार्य करते हुए प्रयागराज की पावन धरती पर 2019 में लगभग 5000 विद्यार्थियों के साथ जल गुणवत्ता परीक्षण का ऐतिहासिक प्रयोग आयोजित किया जिसे Guinness World Records तथा Golden book of world Records में दर्ज किया गया। यह उपलब्धि जल जागरूकता एवं वैज्ञानिक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानी जाती है।

इं0 स्वप्निल शर्मा द्वारा जल एवं पर्यावरण से संबंधित क्षमता और व्यवहारिक अनुभव के आधार पर विभिन्न उद्योगों संस्थानों एवं संगठनों को जल प्रबंधन जल आडिट, भूजल प्रभाव आकलन सर्वेक्षण व्यवहार्यता अध्ययन तथा इंजीनियरिंग परामर्श जैसे विशेषज्ञ सेवा प्रदान कर रहे हैं।

दर्पण



कु. स्वाती विश्वकर्मा
कक्षा 10
कमला स्मारक इण्टर कालेज
बलापुर, नैनी, प्रयागराज

दर्पण की तरह जियो, जो आया है उसे वैसा ही लौटा दो न कम और न ज्यादा।
आज की मेहनत कल परिवर्तित होकर आपका भविष्य रोशन करेगी।
लोग कहते हैं कि किस्मत खराब है, पर सच्चाई यह है कि लोग खुद की कमियों को देखना ही नहीं चाहते।
लोग दर्पण साफ करते हैं, पर कभी अपनी नीयत साफ नहीं करते।
जो इसांन अंदर से खाली होता है वही बाहर से ज्यादा शोर करता है।
सस्ते लोग ही महँगी चीजों से अपनी कीमत बढ़ाने की कोशिश करते हैं।
दिखावा करने वाले भूल जाते हैं कि इज्जत कपड़ों से नहीं किरदार से मिलती है।
जो आपको सच में जानते है, उन्हें दिखावे की जरूरत नहीं, और जो नहीं जानते,

विश्व शान्ति संदेश

जय विश्वकर्मा || ऊँ नमो विश्वकर्मणे।। **जय विज्ञान**

धर्मो रक्षति रक्षिता:।। शिल्प जगत् जीवन धारयते इति धर्मा:।।

अंतरराष्ट्रीय विश्वकर्मा महाशक्ति पीठ, प्रयागराज

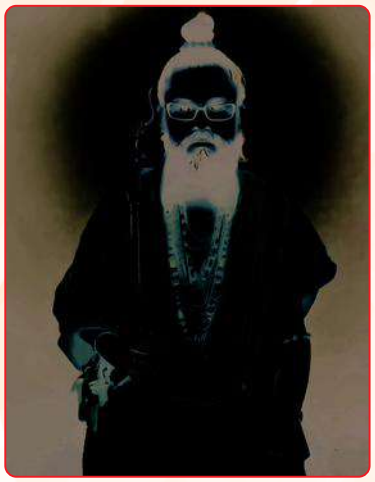

के पीठाधीश्वर जगतगुरु विश्वकर्मा शंकराचार्य

स्वामी दिलीप योगीराज

भगवान विश्वकर्मा जी का 17 सितंबर पूजा पर्व पर सभी मानव को सदबुद्धि हो सद्विचार हो और औजारों के साथ–साथ भगवान विश्वकर्मा का पूजन करके अपने घर परिवार में वास्तु दोष घर शांति आशीर्वाद प्राप्त करें।

अर्न्राष्ट्रीय विश्वकर्मा महाशक्तिपीठ, प्रधान कार्यालय, शोध एवं अनुसंधान केन्द्र, नगर वार्ड नं0 50, नियर जी. ओ. टावर, झूंसी, प्रयागराज उ0 प्र0, भारत।

सम्पर्क सूत्र – 9453109161

ऐतिहासिक उपलब्धि



श्री विश्वकर्मा

प्रमेन्द्र विश्वकर्मा एवं रश्मि विश्वकर्मा
मो.: 8953153408
कीडगंज, प्रयागराज
कोच – त्रिभुवन निषाद जी
(नव जीवन तैराकी क्लब)

प्रयागराज की नन्ही जल परी श्री विश्वकर्मा आयु 3 वर्ष अपने साहस, अनुशासन, मेहनत और लगन से अपने कोच त्रिभुवन निषाद के प्रशिक्षण व आर्शिवाद से 27 जून 2026 दिन शनिवार को सिंधू सागर घाट (बरगद घाट) दक्षिण हनुमान जी का मन्दिर मीरापुर प्रयागराज से 500 मीटर चौड़ी यमुना नदी 14 मिनट 32 सेकेण्ड में ब्रेस्ट स्ट्रोट स्टाइल से पार कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। श्री विश्वकर्मा एवं पूरे परिवार को इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए बहुत-बहुत बधाई साथ ही विश्वकर्मा परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है कि श्री विश्वकर्मा अपनी मेहनत लगन से अपने जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुँचे और अपने पूरे परिवार व समाज को गौरवान्वित करें।



महामण्डलेश्वर स्वामी विनयानन्द गिरी जी
पंचायती श्री निरंजनी अखाड़ा
श्री हरि धाम पीठाधिश्वर

महामण्डलेश्वर स्वामी विनयानन्द गिरी जी
पंचायती श्री निरंजनी अखाड़ा
श्री हरि धाम पीठाधिश्वर

सनातन रक्षक परिषद - प्रदेश अध्यक्ष
मो.: 8840437471, 9454007636

अन्तरराष्ट्रीय मंच पर भारत का गौरव



ई. दिव्यांश विश्वकर्मा

पुत्र श्री आनन्द विश्वकर्मा एवं श्रीमती बिन्दू विश्वकर्मा
राजरूपपुर, प्रयागराज
मो.: 9305026559



स्विट्जरलैण्ड के जिनेवा में आयोजित AI for Good Global Summit 2026 के दौरान भारत का प्रतिनिधित्व आप द्वारा किया गया। दिव्यांश विश्वकर्मा ने कहा यह मेरे जीवन के सबसे गर्वपूर्ण और यादगार क्षणों में से एक है कि मुझे स्विट्जरलैण्ड के जिनेवा में आयोजित AI for Good Global Summit 2026 के दौरान भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला। इस अवसर पर आयोजित प्रतिष्ठित ITUAI & Space Computing Challenge 2026 में मैंने Track-2 Clean Water श्रेणी में अपने शोध एवं नवाचार परियोजना 52 wish (Sentinel-2 water intelligence System of Clean Hydrology) के साथ भाग लिया विश्वभर से आए प्रतिभाशाली शोधकर्त्ताओं, इंजीनियरों और नवप्रवर्तकों के बीच प्रतिस्पर्धा करते हुए मेरी परियोजना को Innovation Award से सम्मानित किया गया। यह उपलब्धि मेरे लिए केवल एक पुरस्कार नहीं बल्कि भारत का प्रतिनिधित्व करने का एक गौरवपूर्ण अवसर था। अंतर्राष्ट्रीय मंच पर खड़े होकर अपने नाम के साथ भारत का प्रतिनिधितव करना एक ऐसा अनुभव था, जिसे शब्दों में पूरी तरह व्यक्त करना कठिन है। मेरी परियोजना का उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) और उपग्रह चित्रों (Satelite Imagery) का उपयोग करके जल की गुणवत्ता का अध्ययन करना था। इस शोध का उद्देश्य भविष्य में झीलों, नदियों और जलाशयों की निगरानी को अधिक प्रभावी और व्यापक बनाना।



सुश्री मंगला सलोनी
चन्दुआ, छित्तूपुर, सिगर (वाराणसी) उत्तर प्रदेश

भगवान श्री विश्वकर्मा जी के चरणों एक प्यारी सी लोक गीत.....

विश्वकर्म करके कीर्ति जग में सुहाला
विश्वकर्मा बाबा....
देवतन में देवता निराला हमार
विश्वकर्मा बाबा.....॥
तुहईत बनाई दिहला लंका के नगरिया
कर कमलों से साज्या काशी के शहरिया
जहाँ के निवासी विश्वनाथ डमरूवाला
विश्वकर्मा बाबा.....
देवतन में देवता निराला हमार
विश्वकर्मा बाबा
उडीसा बनाई दिहल द्वारिका नगरिया
वृन्दापुरी सुदामा जी के साजला
अटीरया
देवतन में देवता निराला हमार
विश्वकर्मा बाबा
शत शत नमन बा ऐसन देव नाहीं दूजा
ज्ञान विज्ञान दिहले करी मन से पूजा
आपही की देन दीपक ज्ञान बुद्धि
वाला विश्वकर्मा बाबा .....
देवतन में देवता निराला हमार
विश्वकर्मा बाबा.....
बसिया बनवला जो बजाए नन्दलाला
विश्वकर्मा बाबा.....
देवन में देवता निराला हमार
विश्वकर्मा बाबा
स्थल प्रसिद्ध काशमीर के रचइया
जेह पर नजरिया लगाए बा मुदइया
हिन्द का अभिन्न अंग कश्मीर आला
विश्वकर्मा बाबा.....

गायक शनि विश्वकर्मा
ग्राम- बनपुरवा सेमरी तालुका पुरवा
अकोढ़ा, करछना, प्रयागराज
मो.: 8808795599

विश्वकर्मा समाज के युवा : विरासत, शिक्षा और भविष्य की चुनौतियाँ



सुश्री मंजुला शर्मा
अधिवक्ता
मो.: 7991965406

''विरासत केवल वह नहीं जो हमें पूर्वजों से मिलती है बल्कि वह भी है जिसे हम आने वाली पीढ़ियों के लिए छोड़कर जाते है।''

भारत की सभ्यता और संस्कृति का निर्माण केवल राजाओं, शासकों और विद्वानों ने नहीं किया, बल्कि उन अनगिनत हाथों ने भी किया है जिन्होंने अपनी कला, श्रम और कौशल से भारत को आकार दिया । इन्हीं कर्मशील परंपराओं में विश्वकर्मा समाज का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आज विश्वकर्मा समाज की नई पीढ़ी एक ऐसे दौर में खड़ी है, जहाँ उसके सामने एक ओर अपने पूर्वजों की गौरवशाली विरासत है, तो दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा, तकनीक, रोजगार और बदलती अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ है। ऐसे में सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हम अपनी विरासत को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक युग के साथ कदम कैसे मिलाए?

गौरवशाली विरासत और बदलता समाज – विश्वकर्मा समाज की पहचान सदियों से अपने हुनर और कार्य से रही है। लकड़ी, धातु, आभूषण, मूर्तिकला निर्माण तथा विभिन्न प्रकार के पारंपरिक शिल्पों में पीढ़ियों से अर्जित अनुभव इसकी अमूल्य पूंजी है। लेकिन समय बदल रहा है। मशीनों और आधुनिक तकनीकों ने पारंपरिक कार्यों के स्वरूप को बदल दिया है। बाजार की आवश्यकताएँ बदल गई है और पारंपरिक व्यवसायों के समाने नई प्रतिस्पर्धा खड़ी हो गई है। इस परिवर्तन को चुनौती के रूप में देखने के बजाय अवसर के रूप में देखना होगा। पुराना हुनर और नई तकनीक जब एक साथ मिलते है, तो नई संभावनाओं का जन्म होता है।

शिक्षा नई पीढ़ी की सबसे बड़ी शक्ति – आज विश्वकर्मा समाज के युवाओं के सामने सबसे महत्वपूर्ण अवसर शिक्षा का है। शिक्षा केवल नौकरी पाने का माध्यम नहीं, बल्कि सोचने, निर्णय लेने और अपने अधिकारों को समझने की शक्ति भी है।

युवाओं को पारंपरिक कौशल के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। तकनीकी शिक्षा, कम्प्यूटर, डिजिटल मार्केटिंग, डिजाइनिंग, इंजीनियरिंग, प्रबंधन और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में आगे बढ़कर वे अपनी पारंपरिक क्षमता को नये रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

आज आवश्यकता है कि समाज में यह सोच मजबूत हो-

''हुनर हमारी पहचान है और शिक्षा हमारी उड़ान।''

रोजगार से उद्यमिता की ओर:

आज युवाओं के सामने केवल नौकरी प्राप्त करना ही एक मात्रा विकल्प नहीं है। स्वयं का व्यवसाय, स्टार्टअप, ऑनलाइन व्यापार और आधुनिक उद्यमिता भी बड़े अवसर है। उदाहरण के लिए हस्तनिर्मित वस्तुओं को सोशल मीडिया और ई-मार्केटिंग के माध्यम से ई-कामर्स के माध्यम से देश-विदेश के बाजार तक पहुंचाया जा सकता है।

भविष्य की दिशा –

विश्वकर्मा समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए कुछ बातों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है-

1. युवाओं में उच्च एवं तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना।
2. पारंपरिक कौशल को आधुनिक तकनीक से जोड़ना।
3. युवाओं को उद्यमिता और डिजिटल व्यापार का प्रशिक्षण देना।
4. नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ना।
5. सामाज में शिक्षा और प्रतिभा को जातीय सीमाओं से ऊपर रखकर प्रोत्साहित करना।
6. युवाओं को केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला बनने के लिए प्रेरित करना।

निष्कर्ष – विश्वकर्मा समाज की सबसे बड़ी शक्ति उसकी कर्मठता, कौशल और सृजनशीलता है। आज आवश्यकता इस शक्ति को शिक्षा, तकनीक और आधुनिक अवसरों से जोड़ने की है।हमारे पूवर्जों ने अपने हाथों से समाज का निर्माण किया। अब हमारी युवा पीढ़ी को ज्ञान, तकनीक और कौशल के माध्यम से भविष्य का निर्माण करना है।

आने वाला समय उन युवाओं का है जो अपनी जड़ों को पहचानते है, लेकिन अपनी दृष्टि भविष्य पर रखते है।

समाज की नई पीढ़ी के लिए संदेश स्पष्ट है- विरासत को संभालिए, शिक्षा को अपनाइए, तकनीक से जुड़िए और अपने हुनर को दुनिया तक पहुंचाइए क्योंकि जिन हाथों ने अतीत को गढ़ा है उन्हीं हाथों में भविष्य को गढ़ने की भी शक्ति है।

शाकाहार और विश्व शान्ति



डॉ0 आलोक विश्वकर्मा
M.A. NET Ph.d

शाकाहार मात्र आहार नहीं बल्कि यह परिपूर्ण जीवन शैली (लाइफ स्टाइल) है। यह ऐसी जीवन शैली है जिसमें स्वयं की हर तरह से प्रगति, विकास और उन्नति के अवसर मौजूद रहते हैं। साथ ही परिवार, समाज और सारी मानवता के कल्याण, विकास और आनन्द के अवसर हमेशा उपस्थित रहते हैं, क्योंकि इसमें हिंसा, घृणा, कायरता, असहिष्णुता, हत्या, शोषण, जुल्म और कठोरता का कोई स्थान नहीं है। शाकाहार से किसी भी व्यक्ति को कभी भी, किसी प्रकार का भ्रम, संशय या हानि नहीं होती है। इसमें प्रत्येक प्राणी को उसके जीवन जीने का पूरा हक मिलता है। एक दूसरे पर अविश्वास का कभी अवसर नहीं आता। सबल और निर्बल का ही नहीं बल्कि मूक (अबोल) प्राणी के साथ भी मैत्रीका संबंध निरन्तर बना रहता है। अशांति के जितने भी कारण हो सकते है वे इसमें किसी भी स्तर पर नहीं दिखाई देते हैं।

विश्व में सब को सुख, शांति से जीने का बराबर का हक और सहिष्णुता का वातावरण केवल और केवल शाकाहार से ही संभव है। एक प्राणी दूसरे प्राणी के साथ किस प्रकार की मित्रता व मैत्री का सम्बन्ध सदैव कायम रख सकता है, यह शाकाहार के दर्शन व जीवन शैली में ही संभव है।शांति और क्रांति दोनों साथ-साथ चलाने के लिए शाकाहार का दर्शन सबसे उत्तम, सर्वकल्याणकारी और सबके विकास को निश्चित करता है। एक-दूसरे के प्रति विश्वास, श्रद्धा, प्रेम और करुणा का भाव शाकाहार के दर्शन में ही निहित है। महान दार्शनिक बर्नार्ड शॉ कहते है-मानव सभ्यता और संस्कृति को सर्वोच्चता प्रदान करने के लिए यदि कोई दर्शन (विचार) सर्वहितकारी और अहिंसापरक हो सकता है, तो वह केवल शाकाहार का दर्शन हो सकता है। गाँधी विश्व-शांति और क्रांति के साथ मानव जीवन की उत्तमता, मौलिकता और नवीनता को आवश्यक मानते थे। उनके ये विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है। विश्व में जहाँ भी शांति, क्रांति और प्रगति का सूर्य उदय हुआ वहाँ, अहिंसा, प्रेम, करुणा, दया और धर्म को प्रमुखता दी गयी। आज भले ही मांसाहार विश्व सभ्यता का हिस्सा हो लेकिन प्रगति, शांति और क्रांति का मानव सभ्यता एवं संस्कृति के लिए आवश्यक मानने वाले सभी लोग यह मानते हैं कि, अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा और सहिष्णुता, प्रत्येक मानव की प्रगति का हिस्सा होना चाहिए। क्रूरता से कोई भी सभ्य और शालीन मानव स्वीकार नहीं करता है। वेदोद्धारक और महान समाजसुधारक महर्षि दयानन्द, समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले, माता सावित्री फुले, संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ० भीमराव अम्बेडकर, महात्मा बुद्ध, संत कबीर, संत तुलसीदास, महान कवि रसखान, विश्वविख्यात् साहित्यकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर और संत तुलसीदास विश्वशांति के लिए अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा और सहिष्णुता को आवश्यक मानते थे। सबका मानना है सभी मानव मूल्य शाकाहार के माध्यम से ही कामय रखे जा सकते हैं।

पाश्चात्य साहित्यकार शेक्सपीयर शाकाहार के दर्शन को मानव सभ्यता का सर्वोत्तम दर्शन मानते थे। वह स्वयं शुद्ध शाकाहारी थे और दूसरों को भी शाकाहार के प्रति प्रेरित किया करते थे। इसी प्रकार दार्शनिक वॉल्टेयर मानव जाति को शांति, सहिष्णुता प्रेम और करुणा का आधार बनाने पर जो दिया करते थे। वह पशुओं, पक्षियों और अन्य जीवों से प्रेम करने पर भी जोर दिया करते थे। स्पष्ट है जो जीवों से प्रेम करता है वह कभी उनकी हत्या या उनके प्रति क्रूरता का भाव नहीं रख सकता है। विश्व में स्थायी शांति कायम रहे इसके लिए स्थायी रूप से मानव सभ्यता के मूल में प्रेम, सत्य, विश्वास, अहिंसा, करुणा, क्षमा, दया और सहिष्णुता जैसे मूल्य हमेसा कायम रहना आवश्यक है। कहने का भाव यह है कि प्रत्येक मनुष्य के गुण, कर्म और स्वभाव में अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा और सहिष्णुता जैसे सद्गुण कायम रहने चाहिए। प्रश्न यह है कि क्या प्रत्येक मनुष्य हर समय ऐसे सद्गुणों से भरा रह सकता है? मुझे लगता है कहने, लिखने और बोलने में तो यह संभव है लेकिन व्यवहार में यह दिखाई नहीं देताहै। इस लिए विश्व शांति की कल्पना केवल कल्पना में ही दिखाई देती है। जब विश्व में हथियारों की होड़ लगी हो जब प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ में दूसरों के स्वार्थ की हानि पहुँचाने में अपनी शान समझता हो और जब प्रत्येक मानव अपने सुख के लिए दूसरों को दुःख देने में कोई संकोच न करता हो तो ऐसे विश्व शांति की बात अधूरी लगती है।

हम सभी जानते हैं कि विदेशी धरती, विशेषकर पश्चिमी देशों में प्रचलित जीवन शैली मांसाहारी यानी हिंसा प्रधान है। क्रूरता शोषण और हत्या से प्राप्त आहार वाली जीवन शैली के अंग हत्या, शोषण और क्रूरता पर आधारित है। लेकिन इन्हीं देशों में ऐसे अनेक दार्शनिक, साहित्यकार एवं वैज्ञानिक हुए जो हत्या, हिंसा, शोषण एवं क्रूरता को मानव जीवन शैली व मानव सभ्यता के विरुद्ध मानते थे।

डॉ0 आलोक विश्वकर्मा
M.A. NET Ph.d
(असि० प्रोफेसर (हिन्दी)
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज

आज के उदारीकरण समाज में पिछड़ी जाति का संकट



राम मिलन विश्वकर्मा
M.A. B.Ed (Lecturer)

''आज के उदारीकरण वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण समाज में विश्वकर्मा जाति (जिसमें मुख्य रूप से बढ़ई, लोहार, सुनार, शिल्पकार और ताम्रकार शामिल है।) एक गहरे सामाजिक, आर्थिक संकट से गुजर रही है। पारंपरिक रूप से हस्तशिल्प निर्माण और तकनीकी कौशल में निपुण यह समुदाय आज की कार्पोरेट और मशीनी अर्थव्यवस्था में हाशिए पर आ गया है। ''उदारीकरण के कारण इस पिछड़ी-जाति के सामने आ रहे मुख्य संकट निम्नलिखित है-

मशीनीकरण और कार्पोरेट जगत से असमान मुकाबला

1. पारम्परिक रोजगार का छिनना - उदारीकरण के बार बाजार में रेडीमेड और फैक्ट्री-निर्मित उत्पादों की बाढ़ आ गई है। जो काम पहले बढ़ई या लोहार हाथ से करते थे, उसे अब बड़ी-बड़ी कंपनियों या मशीनों से बहद कम समय और कम लागत से तैयार कर रही हैं।

2. आर्थिक और तकनीकी पिछड़ापन - पूंजी के अभाव - विश्वकर्मा समाज के अधिकांश लोग छोटे पैमाने पर या कुटीर उद्योग के रूप में काम करते हैं, उनके पास आधुनिक मशीने, खरीदने या बड़े स्तरपर व्यापार फैलाने के लिए पूंजी और बैंक लोन की उचित सुविधान नहीं मिल पाती।

डिजिटल और आधुनिक कौशल की कमी-

तकनीकी और ई-कामर्स के इस दौर में इस जाति के पारम्परिक कारीगरों को आधुनिक डिजाइनिंग साफ्टवेयर या आन लाइन व्यापार का सही प्रशिक्षण नहीं मिल पा रहा है।

3. सामाजिक प्रतिनिधित्व का संकट - शारीरिक श्रम का कम मूल्यांकन - आज के समाज में व्हाइट कॉलर (इफ्तर की नौकरियों) को ज्यादा सम्मान दिया जाता है जबकि विश्वकर्मा समाज के ब्लू कॉलर (शारीरिक और तकनीकी श्रम) को आज भी वह सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं मिल पाती है जिसके वे हकरदार है।

राजनीतिक हिस्सेदार की कमी : अन्य पिछड़ी-जातियों की तुलना में संख्यागत या राजनीतिक मजबूती न होने के कारण-नीतियां बनाते समय इस समाज की समस्याओं को अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है।

4. समाज के युवाओं के सामने संकट : गरीबी, विश्वकर्मा समाज के युवाओं के सामने गरीबी प्रमुख बाधक बनती है बहुत संख्या में युवा जो उच्च शिक्षा व तकनीकी शिक्षा लेना चाहते है लेकिन धन के अभाव में उनकी ये इच्छाएँ धरी की धरी रह जाती है।

5. सामाजिक एक जुटता का अभाव : समाज में आपसी मतभेद व वैमनस्य के कारण वे एक दूसरे के प्रगति के रास्ते में बाधक बन कर खड़े रहते हैं जिससे सामाजिक एक जुटता का अभाव बना रहता है। समाज का यह दायित्व होना चाहिए कि ऐसे युवाओं को आगे बढ़ने के लिए अवसर देना चाहिए न कि बाधक बनना चाहिए।

मैं समाज को यह अवगत करानाचाहता हूँ कि समाज के युवाओं के सामने इससे परे और भी अनेक समस्याएँ है, जिसका ज्वलंत उदाहरण मैं स्वयं हूँ। मै। गाँव से विलॉग करता हूँ और हम गाँव के अल्पसंख्यक है वरन अन्य जातियों का बाहुल्य है मैं समाज के माध्यम से यह कहना चाहता हूँ कि क्यों हमारे समाज के युवाओं को अन्य बर्वर जातियों द्वारा सताया या दबाया जाता है। यहां तक कि युवाओं को अनायास ही किस केस में फँसा दिया जाताहै तथा थानों में उसके खिलाफ केस दर्ज करवा दिया जाता है ताकि वह किसी सरकारी नौकरी को न प्राप्त कर सके।

मैं समाज के प्रतिष्ठ बन्धुओं से यह विनम्र निवेदन करता हूँ कि इस बिन्दु पर विचार करें ताकि समाज के युवा आगे बढ़े तथा समाज के उत्थान में अपना सहयोग प्रदान करें।

संघर्ष, सेवा, उद्यमिता और नेतृत्व की प्रेरणादायी यात्रा



इं. अजय शर्मा
डायरेक्टर
हिन्द एलिवेटर प्र0लि0

आप एक स्वतंत्रता सेनानी के पुत्र है। आपने मगध विश्वविद्यालय से वर्ष 1994 में स्नातक कि शिक्षा के बाद एयरोनॉटिक्स इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कदम रखा और टाटा एविएशन प्राइवेट लिमिटेड जमशेदपुर में एयरक्रॉफ्ट मेन्टेनेन्स इंजीनियर के रूप में व्यवसायिक जीवन की शुरूआत की उन्होंने विभिन्न विमानों पर मेन्टेनेन्स इंजीनियर के रूप में कार्य किया जिसमें उद्योगपति श्री रतन टाटा के Citation विमान भी था।

आप जेट एयवेज दिल्ली से जुड़े और 3 वर्षो तक अपनी सेवाएं दी, परन्तु कुछ बड़ा करने का संकल्प अपने वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान और व्यवहारिक अनुभव के साथ वर्ष 2005 में प्रयागराज आये और उद्यमशील जीवन की शुरूआत की और अपनी मेहनत लगनशीलता ईमानदारी से 2008 में ''हिन्द एलिवेटर प्राइवेट लिमिटेड'' कम्पनी की स्थापना की और 16 वर्षो से अधिक समय में उनकी कम्पनी ने प्रयागराज, वाराणसी, कानपुर और लखनऊ जैसे प्रमुख शहरों में लिफ्टो की स्थापना के क्षेत्रों में अपनी पहचान बनायी और अपने इस उद्यम में अनेकों युवाओं को रोजगार दिया। उत्कृष्ट इंजीनियरिंग से हिन्द ऐलिवेटर ने एक प्रतिष्ठित उद्यम के रूप में अपनी पहचान बनायी। आपको Zee TV ने ''संगम गौरव सम्मान'' तथा Red FM द्वारा ''वायस ऑफ कुम्भ'' सम्मान से नवाजा गया। आप उद्यमिता के साथ सामाजिक कार्यो को नि:स्वार्थ भाव से करते है। आप रोटरी इलाहाबाद से जुड़कर सामाजिक सेवा व विभिन्न महत्वपूर्ण दायित्वों का सफलता पूर्वक निर्वहन करते है।

वर्ष 2012-2013 में क्लब सचिव रहे और 2018 में गोल्डेन जुबली वर्ष में क्लब अध्यक्ष बने। वर्तमान में प्रयागराज क्षेत्र के लिए रोटरी में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सेवा कार्य कर रहे है। आप रोटरी के मेजर डोनर व उदार योगदान के लिए सर्टीफिकेट आप एप्रिशियेशन प्राप्त कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने साइकिल द्वारा एक ही देश में सबसे लम्बी यात्रा पूरी करने वाले पवन और भाग्यश्री के गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड प्रयास में भी सहभागिता सम्मान प्राप्त किया है।

आपका विवाह अल्पना शर्मा से हुआ जो एक समर्पित गृहणी है। आपके दो पुत्र शिवांश और देवांश तथा एक पुत्री शिया है, जो सभी शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं।

आप विश्वकर्मा समाज प्रयागराज के गौरव है !

बेटी

जब-जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी,
आंगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नये नये रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार-बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।



श्रीमती राधा विश्वकर्मा
गांगोत्रि नगर डांडी, नैनी, प्रयागराज

शून्य से शिखर की यात्रा



अनिल कुमार विश्वकर्मा
पुत्र स्व0 श्री श्याम बिहारी विश्वकर्मा
स्व0 श्रीमती कमला देवी

संघर्ष, सेवा, सफलता का अद्भुत व्यक्तित्व श्री अनिल विश्वकर्मा जी जिन्होंने यमुना पार बलापुर ग्रामीण क्षेत्र में मातृत्व को अमरत्व प्रदान करने हेतु कमला स्मारक इण्टरमीडिएट कालेज अपनी मेहनत, लगनशीलता, ईमानदारी से स्थापित किया और आज उनके विद्यालय में लगभग पन्द्रह सौ विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इनके विद्यालय से पढ़ने वाले छात्र-छात्रायें हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परिक्षा में जिले में स्थान बनाते है एवं प्रतियोगि परिक्षा में भी सफल हो रहें है।

आप समाज के बच्चों को शिक्षित करने का कार्य अनवरत रूप से कर रहे है। आप के द्वारा लायन्स क्लब के माध्यम से सेवार्थ कार्य बिना किसी स्वार्थ के किया जाताहै। निर्धन कन्याओं का विवाह, आर्थिक रूप से अक्षम बच्चों को निःशुल्क शिक्षा, सांस्कृतिक, सामाजिक कार्यक्रमों में आर्थिक सहयोग कर समाज को मानव सेवा का संदेश देने का कार्य करते है। आप विश्वकर्मा समाज प्रयागराज का गौरव है। विश्वकर्मा पॉचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज कामना करता है आप अपने जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुँचे और पूरे समाज को गौरवान्वित करें।

समाज के नाम मेरा संदेश



गायक शनि विश्वकर्मा
ग्राम- बनपुरवा सेमरी तालुका पुरवा
अकोढ़ा, करछना, प्रयागराज
मो.: 8808795599

''एकता हमारी शक्ति है, संस्कार हमारी पहचान है और समाज की सेवा हमारा दायित्व है।'' श्री विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण समाज के सभी सम्मानित वरिष्ठजनों, मातृशक्ति, युवाओं एवं मेरे प्रिय समाजबंधुओं को मेरा सादर प्रणाम।

हमारा समाज अपनी मेहनत, हुनर, ज्ञान संस्कार और कर्मठता के लिए सदैव पहचाना जाता रहा है। भगवान श्री विश्वकर्मा जी की परंपरा हमें सृजन, कौशल और कर्म के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। आज आवश्यकता है कि हम अपनी गौरवशाली विरासत को संजोते हुए आधुनिक समय की शिक्षा, तकनीक और नए अवसरों के साथ कदम से कदम मिलकर आगे बढ़े।

मेरा मानना है कि किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसके शिक्षित युवा, संस्कारी परिवार और एकजुट समाज में होती है। हमें अपने बच्चों की शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए, युवाओं को सही दिशा और अवसर देने चाहिए तथा समाज के जरूरतमंद परिवारों का सहयोग करना चाहिए। प्रतिभा चाहे शिक्षा के क्षेत्र में हो, संगीत में, कला में, व्यवासाय में, तकनीकी क्षेत्र में या किसी अन्य क्षेत्र में हो उसे प्रोत्साहन और उचित मंच मिलना चाहिए। विशेष रूप से मैं अपने समाज के युवाओं से कहना चाहता हूँ कि अपने सपनों को छोटा मत समझिए। निरंतर मेहनत, अनुशासन और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़िए। अपनी सफलता के साथ समाज और आने वाली पीढ़ी के लिए भी कुछ करने का संकल्प लीजिए।

संकल्प

संगठन में शक्ति है, शिक्षा में प्रगति है और एकता में समाज का भविष्य है।



इन्द्र बहादुर विश्वकर्मा
(एडवो.)
नगर सभापति
विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण
नगर सभा प्रयागराज

हमारा समाज सदैव अपनी मेहनत, हुनर, कला व निर्माण क्षमता हेतु जाना जाता हैं आज आवश्यक है कि हम अपनी क्षमता हेतु इस गौरवशाली परंपरा को आधुनिक शिक्षा, तकनीकि ज्ञान और मजबूत सामाजिक संगठन के साथ आगे बढ़ाए।

समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब हमारा प्रत्येक परिवार शिक्षा के महत्व को समझे और अपने बच्चो को गुणवन्ता पूर्ण शिक्षा दिलाने का प्रयास करें। इसके साथ ही समाज के युवाओं को राजगार, स्वरोजगार और आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण के अवसरों से जोड़ना होगा।

हमें समाज हित मं अपने आयमी मतभेदों से उपर उठना होगा। समाज के किसी परिवार की आर्थिक, शैक्षणिक व सामाजिक कठिनाई में यदि सामज उसके साथ खड़ा होतो यही हमारी सामाजिक एकता की सच्ची पहचान होगी।

हमारा उद्देश्य शिक्षित, संगठित, संस्कारित आत्मनिर्भर और जागरूक समाज का निर्माण करना है

आइए, मिलकर ऐसा विश्वकर्मा समाज बनाए जिस पर हमारी आने वाली पीढ़ियों गव्र कर सके।

जय आयुर्वेद **ॐ धन्वंतराये नमः** **जय विज्ञान**



वैद्य मनोज विश्वकर्मा
(नेचुरोपैथ)
होलागढ़ प्रयागराज
मो0: 9198359442

आयुर्वेद एक प्राचीन चिकित्सा विज्ञान है। इसका नाम संस्कृत के शब्द ''आपुर'' (जीवन) और ''वेद'' (ज्ञान) से आया है। यह प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। यह वेदों और पुराणों में उल्लिखित है आयुर्वेद की खोज भारत में हुई है। यह कम से कम हजारों वर्षों से भारत में प्रचलित है लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1976 में मान्यता दी। आयुर्वेद में त्रिदोष यानी वात-पित्त-कफ ये हमारे शरीर को नियंत्रित करते है ये तीनों दोष को संतुलित रहना हमें स्वस्थ रखता है। जब इन दोषों का संतुलन बिगड़ जाता है तो हमारे स्वास्थ्य पर खराब असर डालते हैं और बीमारियों का कारण बनते है। आयुर्वेद में यह माना जाता है कि प्रकृति में पांच तत्व होते हैं। पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि, आकाश ये पांच तत्व वात, पित्त, कफ इन पांच तत्व के मिश्रण से बने हैं।

वात-वायु और आकाश से बना है।

पित्त-अग्नि और जल से बना है। और

कफ- पृथ्वी और जल से बना है।

आयुर्वेद में त्रिदोषों को संतुलित रखने के लिए कई उपाय किये जाते हैं। सेहतमंद जीवन जीने के लिए हम अपने आहार, व्यायाम और ध्यान को संतुलित रखें ताकि हमारे दोष संतुलित रहें और हम स्वस्थ रहें।

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज
प्रबन्धकारिणी समिति चुनाव 2025-2026

विज्ञप्ति

कार्यालय जिला विद्यालय निरीक्षक, प्रयागराज

संशोधित विज्ञप्ति

इस कार्यालय के पत्रांक/डी०स०नि०-2/1867-68/2025-26 दिनांक 23.04.2025 द्वारा संस्था-विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण महासभा प्रयागराज की सोसाइटी/संस्था प्रकाश समिति के चुनाव हेतु की अवध चुनाव तिथि, तथा जिला विद्यालय निरीक्षक, प्रयागराज को पर्यवेक्षक एवं प्रधानाचार्य, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भिपरहं, मेजा प्रयागराज को चुनाव अधिकारी अंकित किया गया है। इस कार्यालय के पत्रांक/डी०स०नि०-2/7672/2025-26 दिनांक 23.08.2025 द्वारा चुनाव की तिथि, समय एवं स्थान निर्धारित करते हुए विज्ञप्ति हेतु पत्र जारी किया गया था। श्री हरिनन्द विश्वकर्मा, संरक्षक, विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज ने अपने पत्र दिनांक 26.08.2025 द्वारा सोसाइटी का नाम शुद्ध कराने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत करते हुए अनुरोध किया गया। उक्त अनुरोध के क्रम में इस कार्यालय के पत्रांक/डी०स०नि०-2/8133-34/2025-26 दिनांक 26.08.2025 द्वारा सहायक रजिस्ट्रार फर्म सोसाइटीज एवं चिट्स, मेजारी कलेक्ट्रेट तहसील, प्रयागराज सोसाइटी का नाम शुद्ध हेतु पत्र प्रेषित किया गया, जिसकी प्रति में सहायक सहायक रजिस्ट्रार फर्म सोसाइटीज एवं चिट्स प्रयागराज के पत्र संख्या-1430/डी-1543/2025-26/प्रयागराज दिनांक 29.08.2025 द्वारा संस्था-विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण महासभा प्रयागराज के स्थान पर शुद्ध संस्था का नाम विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज संशोधित करते हुये पंजीकृत नियमावली की प्रमाणित प्रति उपलब्ध करायी गयी है।

अतः संस्था-विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज की पंजीकृत नियमावली की प्रमाणित प्रति एवं साधारण सभा के वैध/अवैध सदस्यों की सूची के अनुसार चुनाव सम्पन्न कराये जाने हेतु दिनांक, समय एवं स्थान निर्धारित किया जाता है।

सोसाइटी/संस्था–विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज

दिनांक	चुनाव कार्यवाही	समय	स्थान
08.09.2025 (सोमवार)	नामांकन	11:00 AM	राजकीय इण्टर कॉलेज मेडिकल चौराहा, प्रयागराज
08.09.2025 (सोमवार)	नामांकन की वापसी	01:00 PM	
15.09.2025 (सोमवार)	चुनाव	11:00 AM	
15.09.2025 (सोमवार)	मतगणना	04:00 PM	

(वी.एस. यादव) चुनाव अधिकारी
प्रधानाचार्य, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भिपरहं, मेजा, प्रयागराज

(अजय कुमार गिरि)
पर्यवेक्षक/
जनपद जिला विद्यालय निरीक्षक, प्रयागराज

नामांकन
दिनांक 8.09.2025 (सोमवार) राजकीय इण्टर कॉलेज, प्रयागरज



मतदान/मतगणना
दिनांक 15.09.2025 (सोमवार) राजकीय इण्टर कॉलेज, प्रयागरज



विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज
प्रबन्धकारिणी समिति चुनाव 2025-2026
नव निर्वाचित प्रत्याशी





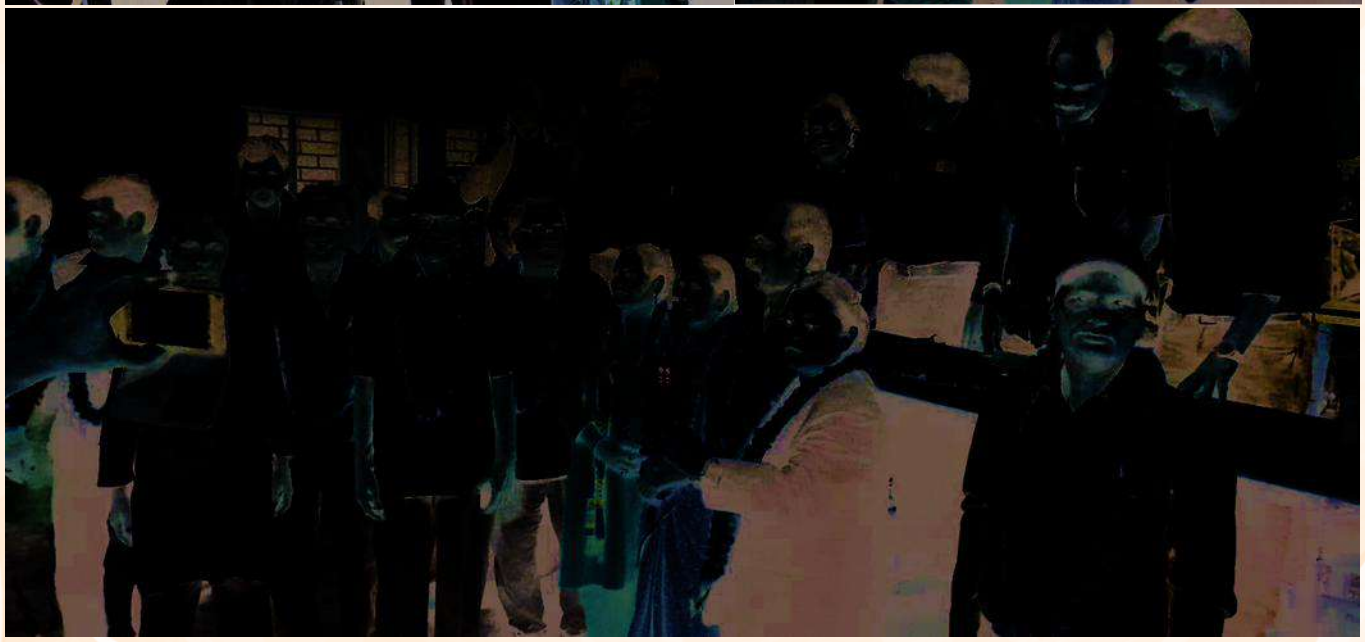



शपथ ग्रहण
दिनांक 17/09/2025

आर0एल0 विश्वकर्मा कुल सचिव नेहरू ग्राम भारती प्रयागराज एवं संयुक्त कुल सचिव (से0नि0) इलाहाबाद विश्वद्यिलय द्वारा नव निवर्चित पदाधिकारीयों कों शपथ ग्रहण कराया गया।

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज
चुनाव आख्या 2025-2026

प्रेषक,

जिला विद्यालय निरीक्षक,
प्रयागराज।

सेवा में,

सहायक रजिस्ट्रार,
फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट्स,
मेंहदौरी कालोनी तेलियरगंज, प्रयागराज।

पत्रांक/वै०स०ग्रेड-2/9949 /2025-26 दिनांक : 25.09.2025

विषय-संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के चुनाव आख्या उपलब्ध कराये जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक कृपया अपने पत्रांक/33/1-15445/2025-26 दिनांक 05.04.2025 का सन्दर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें, जो संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज का चुनाव कराये जाने हेतु अनुरोध किया गया था।

उक्त के क्रम में संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के पदाधिकारी का चुनाव साधारण सभा के वैध/अर्ह सदस्यों की उपलब्ध करायी गयी नियमावली/सूची के अनुसार दिनांक 15 सितम्बर, 2025 को राजकीय इण्टर कालेज प्रयागराज के (एन०एल०एच०) सभागार में सम्पन्न कराते हुए चुनाव कार्यवाही की मूल प्रति संलग्न कर आपकी सेवा में अग्रिम कार्यवाही हेतु प्रेषित है।

संलग्नक-चुनाव आख्या एवं कार्यवाही की मूल प्रति

भवदीय

(पी०एन० सिंह)
जिला विद्यालय निरीक्षक,
प्रयागराज।

संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज

चुनाव आख्या

सेवा में,

जिला विद्यालय निरीक्षक,
प्रयागराज।

महोदय,

आपके कार्यालय पत्रांक/वै०स०ग्रेड-2/7824-28/2025-26 दिनांक 19.08.2025 द्वारा अधोहस्ताक्षरी को पर्यवेक्षक नामित करते हुए संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के पदाधिकारियों का चुनाव कराये जाने के निर्देश दिये गये थे।

उक्त के क्रम में कार्यालय सहायक, फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट्स प्रयागराज के पत्र दिनांक 05.04.2025 एवं पत्र दिनांक 29.08.2025 द्वारा संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के पदाधिकारियों का चुनाव साधारण सभा के वैध/अर्ह सदस्यों की उपलब्ध करायी गयी नियमावली/सूची के अनुसार दिनांक 15 सितम्बर, 2025 को राजकीय इण्टर कालेज प्रयागराज के (एन०एल०एच०) सभागार में सम्पन्न हुआ। चुनाव के उपरान्त विभिन्न पदो हेतु मतगणना हुई, जिसके बाद जिला सभा के कुल-11 पदाधिकारी निर्वाचित हुए तथा दिनांक 08.09.2025 को नामांकन के दिन श्री शिव प्रकाश विश्वकर्मा, मंत्री कल्याण पद हेतु निर्विरोध चुने गये। चुनाव कार्यवाही की छायाप्रति संलग्न करते हुए आख्या आपकी सेवा में अग्रिम कार्यवाही हेतु प्रेषित है।

(अजय कुमार गिरि)
पर्यवेक्षक/
सह जिला विद्यालय निरीक्षक
प्रयागराज।

संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के चुनाव की कार्यवाही

कार्यालय जिला विद्यालय निरीक्षक, प्रयागराज के पत्रांक/वै०स०ग्रेड-2/7824-28/2025-26 दिनांक 19.08.2025 द्वारा संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज का चुनाव कराये जाने हेतु श्री अजय कुमार गिरि, सह जिला विद्यालय निरीक्षक, प्रयागराज को पर्यवेक्षक एवं श्री बी०एस० यादव, प्रधानाचार्य, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पिपरांव मेजा प्रयागराज को चुनाव अधिकारी नामित किया गया।

उक्त आदेश के अनुपालन में कार्यालय सहायक, फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट्स प्रयागराज के पत्र दिनांक 05.04.2025 एवं पत्र दिनांक 29.08.2025 द्वारा साधारण सभा के वैध/अर्ह सदस्यों की सूची उपलब्ध करायी गयी। कार्यालय सहायक, फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट्स प्रयागराज द्वारा प्राप्त करायी गयी नियमावली/सूची के अनुसार संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के पदाधिकारियों का निर्वाचन हेतु नामांकन/नामांकन वापसी दिनांक 08.09.2025 को तथा पदाधिकारियों का निर्वाचन दिनांक 15.09.2025 को राजकीय इण्टर कालेज प्रयागराज के (एन०एल०एच०) सभागार में सम्पन्न हुआ।

चुनाव के उपरान्त विभिन्न पदो हेतु मतगणना हुई, जिसके बाद जिला सभा के कुल-11 पदाधिकारी निर्वाचित हुए तथा दिनांक 08.09.2025 को नामांकन के दिन श्री शिव प्रकाश विश्वकर्मा, मंत्री कल्याण पद हेतु निर्विरोध चुने गये। इस प्रकार संस्था विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज के कुल-12 निर्वाचित/निर्विरोध पदाधिकारियों की सूची निम्नवत है-

क्र०सं०	सूची क्रमांक	नाम	पदनाम
1	2	3	4
01.	29	श्री राम लोटन विश्वकर्मा	सभापति
02.	80	श्री मनोज कुमार	उप सभापति (नगवार)
03.	108	श्री उदयभान	उप सभापति (जमुनापार)
04.	110	श्री अनिल कुमार विश्वकर्मा	उप सभापति (दुआबा)
05.	90	श्रीमती हेमन्ती शर्मा	उप सभापति (नगर क्षेत्र)
06.	94	डॉ० मदन मोहन	महामंत्री
07.	74	श्री भागीरथी विश्वकर्मा	मंत्री संगठन एवं प्रचार
08.	93	श्री राम अधीन विश्वकर्मा	मंत्री अर्थ
09.	53	श्री शिव प्रकाश विश्वकर्मा	मंत्री कल्याण
10.	15	श्री शिव शंकर विश्वकर्मा	मंत्री निर्माण
11.	72	श्री दयन्त कुमार शर्मा	कोषाध्यक्ष
12.	66	श्री विद्याकान्त विश्वकर्मा	आय-व्यय निरीक्षक

15.09.2025
(बी०एस० यादव)
चुनाव अधिकारी/
प्रधानाचार्य, राजकीय उच्चतर
माध्यमिक विद्यालय पिपरांव मेजा
प्रयागराज

15.9.2025
(अजय कुमार गिरि)
पर्यवेक्षक/
सह जिला विद्यालय निरीक्षक
प्रयागराज।

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज के नव निर्वाचित पदाधिकारीयों की सूची कार्यकाल (2025-2028)

क्र.सं.	सदस्य का नाम	फोटो	क्र.सं.	सदस्य का नाम	फोटो
1.	श्री राम लोटन विश्वकर्मा सभापति		7.	श्री भागीरथी विश्वकर्मा मंत्री संगठन एवं प्राचार	
2.	श्री मनोज कुमार उपसभापति (गंगा पार)		8.	श्री राम अधीन विश्वकर्मा मंत्री अर्थ	
3.	श्री उदयभान उपसभापति (यमुनापार)	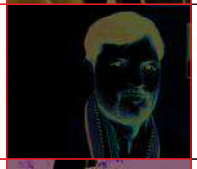	9.	श्री शिव प्रसाद विश्वकर्मा मंत्री कल्याण	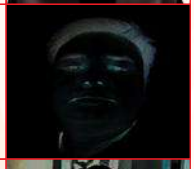
4.	श्री अनिल कुमार विश्वकर्मा उपसभापति (द्वाबा)	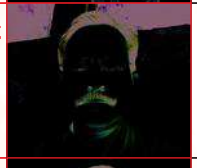	10.	श्री शिव शंकर विश्वकर्मा मंत्री निर्माण	
5.	श्रीमती हेमंती शर्मा उपसभापति (नगर क्षेत्र)		11.	श्री दुष्यन्त कुमार शर्मा कोषाध्यक्ष	
6.	श्री मदन मोहन महामंत्री		12.	श्री विद्याकान्त विश्वकर्मा आय-व्यय निरीक्षक	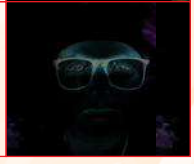

कार्यकारिणी सदस्य

सर्व श्री नरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा
राजू विश्वकर्मा
महेन्द्र कुमार विश्वकर्मा
गोपाल कृष्ण विश्वकर्मा
घन्श्याम विश्वकर्मा
चन्द्रे शेखर विश्वकर्मा

सर्व श्री अनिल कुमार विश्वकर्मा
अरूण कुमार विश्वकर्मा
हरिश्चन्द्र विश्वकर्मा
आनन्द कुमार विश्वकर्मा
सुरेश चंन्द्र विश्वकर्मा
दिलीप कुमार विश्वकर्मा

सर्व श्री अमित कुमार विश्वकर्मा
श्रीमती सुनीता विश्वकर्मा
श्रीमती नीतू विश्वकर्मा
श्रीमती अर्चना विश्वकर्मा
श्रीमती रजनी विश्वकर्मा
सुश्री राखी शर्मा

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण नगर सभा, प्रयागराज

पदाधिकारीगण

श्री इन्द्र बहादुर विश्वकर्मा
सभापति नगर

डॉ. अरूण कुमार
मंत्री नगर

श्री आनन्द विश्वकर्मा
उपमंत्री

श्री श्रेष्ठ विश्वकर्मा
आय व्यय निरिक्षक

श्री राज कुमार विश्वकर्मा
उपसभापति नगर

श्री चन्द्रशेखर विश्वकर्मा
उपमंत्री

श्री अविनाश शर्मा
उपमंत्री

श्री कृष्णा प्रसाद विश्वकर्मा
उपसभापति

डॉ० प्रभाष चन्द्र
उपमंत्री

श्री महेन्द्र कुमार विश्वकर्मा
कोषाध्यक्ष

कार्यकारिणी पदाधिकारी महिला प्रकोष्ठ

श्रीमती नीतू विश्वकर्मा
सभापति (महिला प्रकोष्ठ)

राखी शर्मा (एडवोकेट)
मंत्री नगर (महिला प्रकोष्ठ)

श्रीमती गौरी विश्वकर्मा
उपमंत्री (महिला प्रकोष्ठ)

श्रीमती आयुषी विश्वकर्मा
आय व्यय निरिक्षक (महिला प्रकोष्ठ)

श्रीमती स्नेह लता विश्वकर्मा
उपसभापति (महिला प्रकोष्ठ)

श्रीमती सोनिया शर्मा
उपमंत्री (महिला प्रकोष्ठ)

श्रीमती अर्चना
उपमंत्री (महिला प्रकोष्ठ)

कार्यकारणी सदस्य महिला प्रकोष्ठ
श्रीमती सीमा विश्वकर्मा
श्रीमती निशा विश्वकर्मा
श्रीमती वैशाली विश्वकर्मा
श्रीमती शशी विश्वकर्मा
श्रीमती शालनी शर्मा

श्रीमती रजनी शर्मा
उपसभापति (महिला प्रकोष्ठ)

श्रीमती अर्चना शर्मा
उपमंत्री (महिला प्रकोष्ठ)

श्रीमती सुनीता विश्वकर्मा
कोषाधक्ष (महिला प्रकोष्ठ)

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा, प्रयागराज के अन्तर्गत आनेवाली तहसील सभायें

तहसील सभा करछना
तहसील सभा मेजा
तहसील सभा कोराव
तहसील सभा बारा
तहसील सभा सदर
तहसील सभा सोराव
तहसील सभा फूलपुर
तहसील सभा हण्डिया

विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज द्वारा आयोजित गतिविधियो का चित्र संस्मरण



विश्वकर्मा पाँचाल ब्राह्मण जिला सभा प्रयागराज द्वारा आयोजित गतिविधियो का चित्र संस्मरण

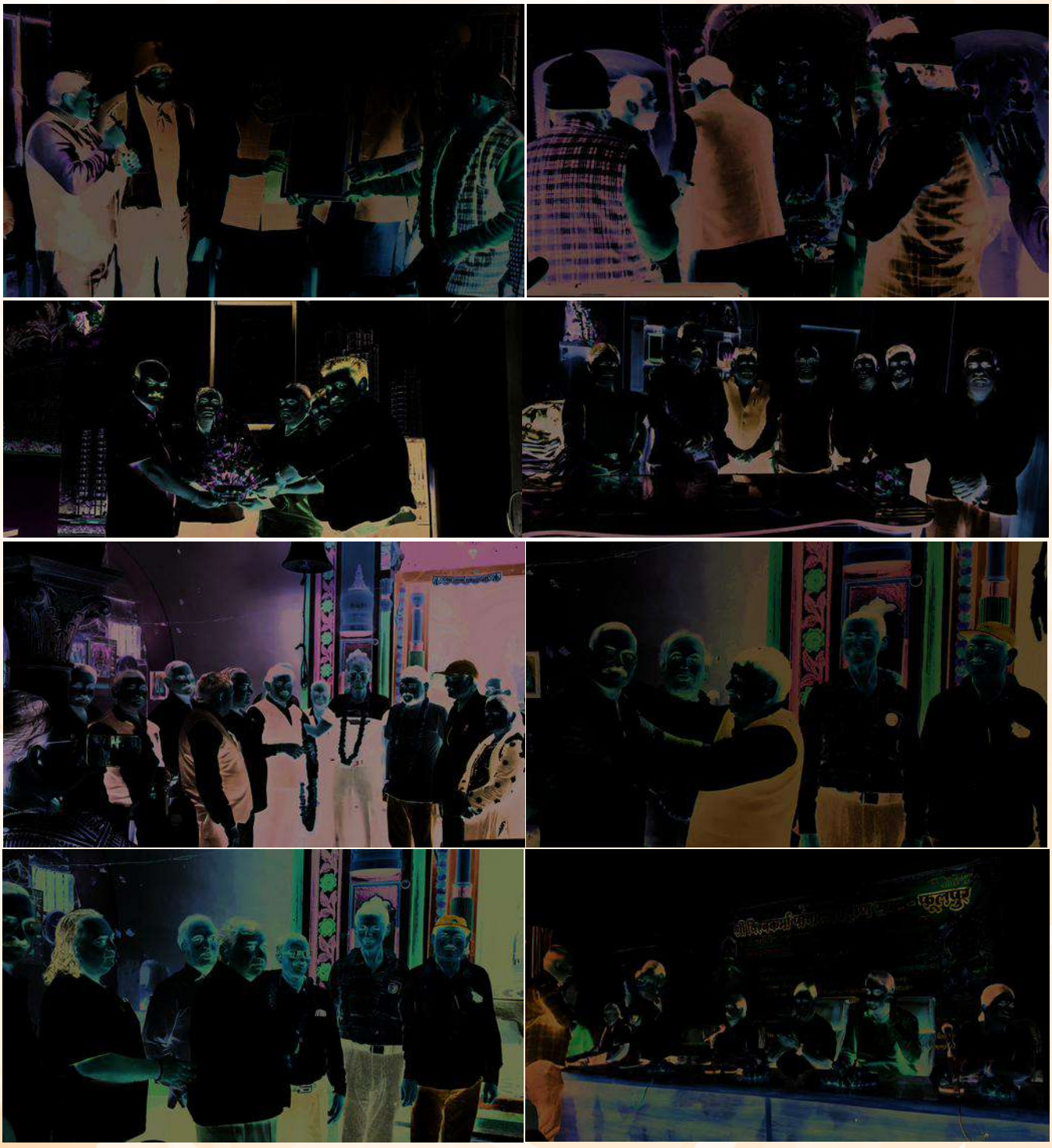

watechem

CISTERN COLLECTION



Distributor : R.S. CERAMICS 7800005170 / 71 / 72

Address:- 185 New Bairhana Near Sri Ram Bhojnalaya, Prayagraj


CT SCAN


ULTRASOUND


X-RAY


2D ECHO


E.C.G.


PATHOLOGY

Dr. Sudheer Singh
M.B.B.S. (M.D.)
MLN Medical
College, Prayagraj

Dr. Namrata Singh
MBBS, MD
(Radiodiagnosis)

Dr. Vikas Singh
MBBS, DNB, CCFRG
Consultant Radiologist
(Fetal & MSK Imaging Specialist)
Certified by FMF London, UK
Formely at PGIMER CHANDIGARH
& AIIMS New Delhi

VEDA

डायग्नोस्टिक्स एण्ड लैब्स

- सी.टी. स्कैन
- अल्ट्रासाउंड
- पैथोलॉजी
- डिजिटल एक्स-रे
- ई.सी.जी
- 2 डी इको

Facilities

- 96 Slice CT Scan
- Ultrasound Abdomen
- Foetal Echo
- 3D/4D Color Doppler Ultrasound of Whole Body & Foetus
- Musculo Skeletal Ultrasound
- 2D Echo
- Digital X-Ray
- Ultrasound of Small Parts Like Eyes, Breast, Scrotum Appendix, Thyroid and cranium
- ECG
- Pathology
- Ultrasound Guided Aspiration and Biopsy

7753921177, 9250269948

vedadiagnostics.labs@gmail.com

Parvati Hospital Chauraha, Opposite Sonal Apartment,
Near Jagat Taran Degree College, George Town, Prayagraj